कश्फ़ुल ग़िता

(सत्य का अनावरण)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: कश्फ़ुल ग़िता
Name of book	: Kashful-ghita
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी।एच।डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाईपिंग, सैटिंग	: नादिया परवेज़ा
Typing Setting	: Nadiya Perveza
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) नवम्बर 2018 ई०
Edition। Year	: 1st Edition (Hindi) November 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt। Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt। Gurdaspur (Punjab)

(टाइटल- प्रथम उर्दू संस्करण का अनुवाद)

हे सर्व शक्तिमान ख़ुदा!

इस महान अंग्रेज़ी सरकार को हमारी ओर से नेक प्रतिफल प्रदान कर और इस से नेकी कर जैसा कि इस ने हम से नेकी की।

आमीन

कश्फ़ुल ग़िता

अर्थात्

एक इस्लामी समुदाय के पेशवा मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी की ओर से महान सरकार की सेवा में इस समुदाय की परिस्थितियों और विचारों के संबंध में सूचना तथा अपने ख़ानदान की कुछ चर्चा और अपने मिशन के सिद्धान्तों, निर्देशों तथा शिक्षाओं का वर्णन और उन लोगों की वास्तविकता के विरुद्ध बातों का खण्डन जो इस समुदाय (फ़िर्क़ा) के बारे में ग़लत विचारों को फैलाना चाहते हैं।

और यह लेखक सम्मान की मुकुट महामहिम महरानी क़ैसरा हिन्द (दाम अक्बालहा) का माध्यम डाल कर महान अंग्रेज़ी सरकार के उच्च अफ़सरों और आदरणीय शासकों की सेवा में सम्मानपूर्वक निवेदन करता है कि असहायों पर कृपा और दया दृष्टि करते हुए इस पुस्तक को प्रारंभ से अन्त तक पढ़ा जाए या सुन लिया जाए।

पुस्तक परिचय

कश्फुल ग़िता

यह पुस्तक 27 दिसंबर 1898 ई० को प्रकाशित हुई। चूंकि मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी आपके और आपके सिलसिला के विरुद्ध ग़लत बातों को गवर्नमेंट तक पहुंचा रहे थे इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह पुस्तक इस उद्देश्य से लिखी ताकि गवर्नमेंट आपके और आपकी जमाअत के सही विचारों और आपके मिशन के सिद्धांतों से परिचित हो जाए और सामान्य विचारधारा के मुसलमान और उनके मौलवी जो अहमदिया जमाअत से हार्दिक द्वेष और ईर्ष्या रखते हैं यदि ईर्ष्या के कारण झूठी बातें सरकार तक पहुंचाएं तो गवर्नमेंट के उच्च अधिकारी इस वास्तविकता के आधार पर सही राय स्थापित कर सकें। इसलिए आपने इस पुस्तक में संक्षिप्त रूप से पहले अपने खानदानी हालात का वर्णन किया है और फिर अपने मिशन के सिद्धांतों और उपदेशों और शिक्षा का सारांश वर्णन किया है और उन ग़लत फ़हमियों का निराकरण किया है जो आप और आपके सिलसिले के बारे में दुश्मन फैला रहे थे। विशेष रूप से मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के इस आरोप का, कि आप गवर्नमेंट अंग्रेजी के अशुभचिंतक हैं और गुप्त रूप से बाग़ियाना इरादे रखते हैं, सविस्तार उत्तर दिया है।

साथ ही मुहम्मद हुसैन बटालवी से इस मुबाहला से संबंधित पूर्ण चर्चा की है जो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के दो शिष्यों मौलवी

अबुल हसन तिब्बती और मौलवी मुहम्मद बख़्श जाफर ज़टली के विज्ञापन तिथि दिनांक 21 अक्टूबर 1898 ई० और 10 नवंबर 1898 ई० को पढ़कर 21 नवम्बर 1898 ई० के विज्ञापन में प्रकाशित किया था और इसकी व्याख्या 30 नवंबर 1898 ई० के विज्ञापन में की थी और परिशिष्ट पुस्तक कश्फ़ुल ग़िता में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के उस अंग्रेज़ी पुस्तक के बारे में वर्णन किया है जिसमें उसने सामान्य मौलवियों की आस्था के विरुद्ध गवर्नमेंट को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया था कि वह ऐसे महदी के कायल नहीं जो मसीह के आसमान से उतरने के समय काफिरों से जंग लड़ेगा और काफिरों का वध करेगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसकी इस आस्था को अकाट्य तर्कों द्वारा मुनाफिक़ाना (दोगला) साबित किया। (कश्फ़ुल ग़िता, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 14 पृष्ठ 217-221, उर्दू एडिशन) और उसके इस आरोप का भी उत्तर दिया है कि मानो आप ने इस विषय का कोई इल्हाम प्रकाशित किया है कि महान सरकार की हुकूमत आठ साल के भीतर नष्ट हो जाएगी। और गवर्नमेंट से निवेदन किया है कि वह इस वास्तविकता के विरुद्ध घटना की मुख्बिरी का इस व्यक्ति से उत्तर मांगे। (कश्फ़ुल ग़िता, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 14 पृष्ठ 216, उर्दू एडिशन)

मैं सम्माननीय महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द दाम इक़्बालहा का वास्ता देता हूं कि इस पुस्तक को हमारे उच्च पदाधिकारी प्रारंभ से अन्त तक ध्यानपूर्वक पढ़ें।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

चूंकि मैं जिस का नाम ग़ुलाम अहमद और पिता का नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा है क़ादियान ज़िला-गुरदासपुर पंजाब का रहने वाला एक प्रसिद्ध फ़िर्क़े का पेशवा हूं जो पंजाब के अधिकांश स्थानों में पाया जाता है तथा हिन्दुस्तान के अधिकतर ज़िलों और हैदराबाद, बम्बई, मद्रास, अरब देश, शाम और बुख़ारा में भी मेरी जमाअत के लोग मौजूद हैं। इसलिए मैं इस बात को हित में समझता हूं कि यह संक्षिप्त पुस्तक इस उद्देश्य से लिखूं कि इस उपकारी सरकार के उच्च अफ़सर मेरी हालतों और मेरी जमाअत के विचारों से जानकारी प्राप्त करें। क्योंकि मैं देखता हूं कि यह नया फ़िर्क़ा दिन-प्रतिदिन इन देशों में उन्नति पर है। यहां तक कि बहुत से देशीय अफसर और प्रतिष्ठित रईस तथा जागीदार, प्रसिद्ध व्यापारी इस फ़िर्क़े में दाखिल हो गए हैं और होते जाते हैं। इसलिए सामान्य विचार के मुसलमानों और उन के मौलवियों को इस फ़िर्क़े से हार्दिक वैर और ईर्ष्या है, और संभव है कि इस ईर्ष्या के कारण वास्तविकता के विरुद्ध बातें सरकार तक पहुंचाई जाएं। इसीलिए मैंने इरादा किया है कि इस पुस्तक के माध्यम से अपने सच्चे वृत्तान्त और अपने मिशन के सिद्धान्तों से इस उपकारी सरकार को अवगत कराऊँ।

अब मैं स्पष्ट करने के लिए इन बातों की चर्चा को पांच खंडों पर विभाजित करता हूं-

प्रथम - यह कि मैं कौन हूं और किस ख़ानदान से हूं? तो इस बारे में इतना व्यक्त करना पर्याप्त है कि मेरा ख़ानदान एक रियासत का ख़ानदान है और मेरे बुज़ुर्ग देश के शासक और स्वाधीन अमीर थे जो सिक्खों के समय में सहसा तबाह हुए और अंग्रेज़ी सरकार का यद्यपि सब पर उपकार है परन्तु मेरे बुज़ुर्गों पर सब से अधिक उपकार है कि उन्होंने इस सरकार के शासन की छाया में आकर एक अग्नि के तन्दूर से मुक्ति पाई और खतरनाक जीवन से अमन में आ गए। मेरा पिता मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा इस इलाके में एक नेक नाम रईस था और सरकार के उच्च अफ़सरों ने ज़ोरदार पत्रों के साथ लिखा कि वह इस सरकार का सच्चा सद्भावक और **वफ़ादार** है और मेरे पिता को गवर्नर के दरबार में कुर्सी मिलती थी और हमेशा उनको उच्च अधिकारी सम्मान की दृष्टि से देखते थे, तथा सदाचारपूर्ण शिष्टाचार के कारण ज़िले और भाग्य के शासक कभी-कभी उनके मकान पर मुलाक़ात के लिए भी आते थे। क्योंकि अंग्रेज़ी अफ़सरों की दृष्टि में वह एक वफ़ादार रईस थे और मैं विश्वास रखता हूं कि सरकार उनकी इस सेवा को कभी नहीं भूलेगी कि उन्होंने सन् 57 ई० के एक संवेदनशील समय में अपनी हैसियत से बढ़कर पचास घोड़े अपनी जेब से खरीद कर और **पचास सवार** अपने परिजनों एवं मित्रों में से उपलब्ध करके सरकार की सहायता के लिए दिए थे। अत: उन सवारों में से कई परिजनों ने हिन्दुस्तान में उपद्रव फैलाने वालों से योद्धाओं के समान लड़ाई करके अपने प्राण दिए। और मेरा भाई ग़ुलाम क़ादिर

(स्वर्गीय) **तिम्मूं** के पत्तन की लड़ाई में शामिल था और बड़ी तन्मयता से सहायता की। अत: इसी प्रकार मेरे उन बुज़ुर्गों ने अपने ख़ून से, अपने माल से, अपने प्राणों से, अपनी निरन्तर सेवाओं से अपनी वफ़ादारी को सरकार की दृष्टि में सिद्ध किया। तो इन्हीं सेवाओं के कारण मैं विश्वास रखता हूं कि महान सरकार हमारे ख़ानदान को साधारण प्रजा में से नहीं समझेगी और उसके उस हक़ को कभी नष्ट नहीं करेगी जो बड़े फ़ित्ने के समय में प्रकट हो चुका है। सर लेपिल ग्रीफ़न साहिब ने भी अपनी पुस्तक तारीख़ 'रईसान-ए-पंजाब' में मेरे पिता श्री और मेरे भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर का वर्णन किया है। और मैं नीचे उच्च शासनधिकारियों के उन पत्रों को दर्ज करता हूं जिन में मेरे पिती श्री और मेरे भाई की सेवाओं की कुछ चर्चा है

نقل مراسلہ
(ولسن صاحب)نمبر۳۵۳
تہور پناہ شجاعت دستگاہ
مرزاغلام مرتضیٰ رئیس قادیان
حفظہٗ عریضہ شما مشعر بر یاددہانی
خدمات و حقوق خود و خاندانِ
خود بملاحظہ حضور ایں جانب
درآمد۔ ماخوب میدانیم کہ بلا
شک شماو خاندان شما از ابتدائے
دخل وحکومت سرکار انگریزی
جان نثار وفاکیش ثابت قدم

Translation of certificate of
J. M. Wilson

To,

Mirza Ghulam
Murtaza Khan
Chief of Qadian.

I have perused your application reminding me of your and your family's past services and rights. I am well aware that since the introduction of the British

مانده اید و حقوق شما دراصل قابلِ قدر اند۔ بہر نہج تسلی و تشفی دارید۔ سرکار انگریزی حقوق و خدمات خاندان شمارا ہرگز فراموش نہ خواہد کرد۔ بموقعہ مناسب برحقوق و خدمات شما غور و توجہ کردہ خواہد شد۔ باید کہ ہمیشہ ہوا خواہ و جان نثار سرکار انگریزی بمانند کہ دریں امر خوشنودی سرکار و بہبودی شما متصور است۔ فقط

المرقوم ۱۱/جون سنہ ۱۸۴۹ء
مقام لاہور انارکلی

Govt you & your family have certainly remained devoted, faithful & steady subjects & that your rights are really worthy of regard. In every respect you may rest assured and satisfied that the British Govt will never forget your family's rights and services which will receive due consideration when a favourable opportunity offers itself. You must continue to be faithful and devoted subjects as in it lies the satisfaction of the Govt. and your welfare.

11.6.1849 Lahore

نقل مراسلہ

رابرٹ کسٹ صاحب بہادر کمشنر لاہور

تہور و شجاعت دستگاہ مرزا غلام مرتضیٰ رئیس قادیان بعافیت

Translation of Mr. Robert Cast's Certificate

To,

Mirza Ghulam Murtaza Khan
Chief of Qadian

As you rendered great help

باشند از آنجا کہ ہنگام مفسدہ ہندوستان موقوعہ ۱۸۵۷ء از جانب آپ کے رفاقت و خیر خواہی و مدد دہی سرکار دولتمدار انگلشیہ درباب اسپان بخوبی بمنصہء ظہور پہنچی اور شروع مفسدہ سے آج تک آپ بدل ہوا خواہ سرکار رہے اور باعث خوشنودی سرکار ہوا۔ لہٰذا بجلدوے اس خیر خواہی اور خیر سگالی کے خلعت مبلغ دو صد روپیہ کا سرکار سے آپ کو عطا ہوتا ہے اور حسب منشاء چٹھی صاحب چیف کمشنر بہادر نمبری ۵۷۶ مورخہ 10/اگست 1857ء پروانہ ھٰذا باظہار خوشنودی سرکار و نیک نامی و وفاداری بنام آپ کے لکھا جاتا ہے۔

مرقومہ

تاریخ 20 / ستمبر1857ء

in enlisting sowars and supplying horses to Govt,in the mutiny of 1857 and maintained loyalty since its begining up to date and thereby gained the favour of Govt, a khilat worth Rs.200/- is presented to you in recognition of good services and as a reward for your loyalty.

More over in accordance with the wishes of chief commissioner as conveyed in his No.576. Dated.10th August 1858. This parwana is addressed to you as a token of satisfaction of Govt, for your fidelity and repute.

अनुवाद नकल चिट्ठी - फिनान्शल कमिश्नर, पंजाब

मेरे प्यारे मित्र, ग़ुलाम क़ादिर रईस क़ादियान! अल्लाह आपको सुरक्षित रखे। आप का पत्र इस माह की 2 तारीख का लिखा हुआ, प्राप्त हुआ।

मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब आप के पिता के निधन से हमें बहुत अफ़सोस हुआ। मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा अंग्रेज़ी सरकार का अच्छा शुभचिन्तक और वफ़ादार रईस था। हम आपका ख़ानदानी दृष्टि से उसी प्रकार सम्मान करेंगे जिस प्रकार तुम्हारे पिता वफ़ादार का किया जाता था। हमको किसी अच्छे अवसर के निकलने पर तुम्हारे खानदान की अच्छाई और पाबजाई का ध्यान रहेगा।

लेखक सर राबर्ट एजबर्टन
साहिब बहादुर
फिनान्शल कमिश्नर, पंजाब।
29 जून 1876 ई०

Translation of Sir Robert Egerton Financial Commr's: Murasala Dated. 29 June 1876

My dear friend
Ghulam Qadir,

I have perused your letter of the 2nd instant & deeply regret the death of your father Mirza Ghulam Murtaza who was a great well wisher and faithful chief of Govt.

In consideration of your family services.I will esteem you with the same respect as that bestowed on your loyal father. I will keep in mind the restoration and welfare of your family when a favourable opportunity occurs.

यह तो मेरे पिता और मेरे भाई का हाल है और चूंकि मेरा जीवन फ़क़ीरों और दरवेशों जैसा है। इसलिए मैं इसी दरवेशों जैसे ढंग से अंग्रेज़ी सरकार की भलाई और सहायता में व्यस्त रहा हूं। लगभग उन्नीस वर्ष से ऐसी पुस्तकों को प्रकाशित करने में मैंने अपना समय व्यतीत किया है जिनमें यह वर्णन है कि मुसलमानों को सच्चे दिल से इस सरकार की सेवा करनी चाहिए और अपनी आज्ञाकारिता और वफादारी को दूसरी क़ौमों से बढ़कर दिखाना चाहिए। मैंने इसी उद्देश्य से कुछ पुस्तकें अरबी भाषा में लिखीं तथा कुछ फ़ारसी भाषा में और उन को दूर-दूर देशों तक प्रकाशित किया। और उन सब में मुसलमानों को बार-बार बल देकर कहा और उचित कारणों से उनको इस ओर झुकाया कि वे दिल एवं प्राणों से सरकार की आज्ञा का पालन करें। ये पुस्तकें अरब, शाम देश, काबुल, बुखारा में पहुंचाई गईं। यद्यपि मैं सुनता हूं कि कुछ मूर्ख मौलवियों ने उन के देखने से मुझे काफ़िर ठहराया है और मेरे लेखों को इस बात का एक परिणाम ठहराया है कि जैसे मुझे अंग्रेज़ी सरकार से एक आन्तिरक और गोपनीय संबंध है और जैसे मैं उन लेखों के बदले में सरकार से कोई इनाम पाता हूं। परन्तु मुझे निश्चित तौर पर ज्ञात हुआ है कि कुछ बुद्धिमानों के हृदयों पर उन लेखों का अत्यन्त अच्छा प्रभाव हुआ है और उन्होंने उन वहशियों जैसी आस्थाओं से तौबः की है जिन में वे इस सरकार के उद्देश्यों के विरुद्ध लिप्त थे। इन नेक प्रभावों के लिए मेरे धार्मिक लेख जो पादरियों के विरोधी थे बड़े प्रेरक हुए हैं अन्यथा जिस ज़ोर के साथ मैंने मुसलमानों को इस सरकार की आज्ञापालन करने के लिए बुलाया है और जगह-जगह सरहद के मुर्ख मुल्लाओं को

जो अकारण आए दिन उपद्रव फैलाते और अफ़ग़ानों को विरोध के लिए उकसाते हैं भर्त्सना की है। ये ज़ोरदार लेख अंग्रेज़ी सरकार की सहायता में पक्षपाती और मूर्ख मुसलमानों के लिए असहनीय थे। और अब बुद्धिमान जब एक ओर धार्मिक सहायता के निबंध मेरे लेखों में पाते हैं और दूसरी ओर मेरी ये नसीहतें सुनते हैं कि इस सरकार की सच्ची हमदर्दी और आज्ञापालन करना चाहिए तो वे मुझ पर कोई कुधारणा नहीं कर सकते और क्योंकर करें यह एक वास्तविक बात है कि मुसलमानों को ख़ुदा और रसूल का आदेश है कि जिस सरकार के अधीन हों वफ़ादारी से उसकी आज्ञा का पालन करें। मैंने अपनी पुस्तकों में से शरीअत के आदेश विस्तारपूर्वक वर्णन कर दिए हैं। अब सरकार स्वयं विचार कर सकती है कि जिस हालत में मेरा पिता सरकार का ऐसा सच्चा शुभ चिन्तक था और मेरा भाई भी उसी के क़दम पर चला था और मैं भी उन्नीस वर्ष से अपनी क़लम के द्वारा यही सेवा करता हूं तो फिर मेरी हालतें किस प्रकार संदिग्ध हो सकती हैं। मेरी सम्पूर्ण जवानी इसी मार्ग में गुज़री और अब हमेशा बीमार रहने वाला वृद्धावस्था के किनारे पर पहुंच गया हूं और साठ वर्ष के लगभग हूं। वह व्यक्ति बड़ा अन्याय करता है जो मेरे अस्तित्व को सरकार के लिए ख़तरनाक ठहराता है। मैं इस से इन्कार नहीं कर सकता कि धार्मिक मामलों के बारे में भी मैंने पुस्तकें लिखी हैं और न मुझे इस से इन्कार है कि पादरी महानुभावों की आस्थाओं के विपरीत भी मेरे लेख प्रकाशित हुए हैं जिनको वे अपने धार्मिक विचारों की दृष्टि से पसन्द नहीं कर सकते। परन्तु मेरे लिए मेरी नेक नीयत पर्याप्त है जिसको ख़ुदा तआला जानता

है और मेरा विरोध सामान्य मुसलमानों की विरोध पद्धति से पृथक है। मैं कदापि नहीं चाहता कि धार्मिक मामलों में इतना (अधिक) क्रोध बढ़ाया जाए कि विरोधियों के आक्रमणों को कानूनी अपराधों के अन्तर्गत लाकर सरकार से उन को दण्ड दिलाया जाए या उन से वैर रखा जाए। अपितु मेरा सिद्धान्त यह है कि धार्मिक शास्त्राथों में धर्म और शिष्टाचार से काम लेना चाहिए। इसी कारण से जब सामान्य मुसलमानों ने 'उम्महातुल मोमनीन' पुस्तक के लेखक को दण्ड दिलाने के लिए अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम के द्वारा सरकार में मेमोरियल भेजे तो मैंने उन से सहमति नहीं की अपितु उनके विरुद्ध मेमोरियल भेजा और स्पष्ट तौर पर लिखा कि धार्मिक मामलों में यदि कोई दुख देने वाली बात सामने आए तो इस्लाम का सिद्धान्त क्षमा और माफ़ करना है। क़ुर्आन हमें स्पष्ट निर्देश देता है कि यदि धार्मिक वार्तालाप में कठोर शब्दों द्वारा तुम्हें कष्ट दिया जाए तो संकुचित विचार रखने वाले लोगों की तरह अदालतों तक मत जाओ तथा सब्र और शिष्टाचार से काम लो। क़ुर्आन ने हमें साफ़ कहा है कि ईसाइयों से प्रेम और शिष्टाचार का व्यवहार करो तथा नेकी करो। हां नेक नीयत के साथ तथा हमदर्दी के मार्ग से और सच्चाई को फैलाने के उद्देश्य से और सुलह की बुनियाद डालने के इरादे से धार्मिक शास्त्रार्थ आपत्तिजनक नहीं।

दूसरी शाखा जो मेरे मिशन के बारे में है मेरी शिक्षा है। मैं अपनी शिक्षा को लगभग उन्नीस वर्ष से प्रकाशित कर रहा हूं। और फिर खुलासे के तौर पर 29 मई 1898 ई० के विज्ञापन तथा 27 फ़रवरी 1895 के विज्ञापन में मैंने इन शिक्षाओं को प्रकाशित किया है।

और ये समस्त पुस्तकें और विज्ञापन छप कर पंजाब तथा हिन्दुस्तान में बहुत ख्याति पा चुके हैं। इस शिक्षा का ख़ुलासा यही है कि ख़ुदा को एक तथा भागीदार रहित समझो, ख़ुदा के बन्दों से हमदर्दी करो, नेक चलन और और नेक खयाल इन्सान बन जाओ। ऐसे हो जाओ कि कोई फ़साद, बुराई तुम्हारे दिल के निकट न आ सके, झूठ मत बोलो, इफ़्तिरा मत करो, किसी को मुख से या हाथ से कष्ट मत दो, प्रत्येक प्रकार के गुनाह से बचते रहो, तामसिक भावनाओं को रोके रखो। कोशिश करो कि ताकि तुम पवित्र हृदय और बुराई से रिक्त हो जाओ। वह सरकार अर्थात् बर्तानवी सरकार जिस की छाया के नीचे तुम्हारे माल, सम्मान और प्राण सुरक्षित हैं श्रद्धापूर्वक उसके वफ़ादार और आज्ञाकारी रहो और चाहिए कि समस्त मनुष्यों की सहानुभूति तुम्हारा सिद्धान्त हो। अपने हाथों तथा अपनी जीभों और अपने हृदय के विचारों को प्रत्येक अपवित्र योजना और फ़साद फैलाने वाले तरीक़ों तथा बेईमानियों (धन हड़पने) से बचाओ। ख़ुदा से डरो और पवित्र हृदय से उसकी उपासना कर, अन्याय, अत्याचार, ग़बन, रिश्वत, किसी का हक़ मारना और अनुचित पक्षपात से रुके रहो। बुरी संगत से बचो, आखों को बुरी निगाहों से बचाओ, कानों को चुग़ली सुनने से सुरक्षित रखो। किसी धर्म और किसी क़ौम, किसी गिरोह के आदमी को बदनामी तथा हानि पहुंचाने का इरादा मत करो और प्रत्येक के लिए सच्चे नसीहत करने वाले बनो। चाहिए कि उपद्रव फैलाने वाले लोगों और बुरे एवं बदमाशों तथा दुष्कर्मियों का तुम्हारी मज्लिस में कदापि गुज़र न हो, प्रत्येक बुराई से बचो और प्रत्येक नेकी को प्राप्त करने के लिए कोशिश करो। और चाहिए कि तुम्हारे हृदय छल से

पवित्र और तुम्हारे हाथ अत्याचार से बरी, तुम्हारी आंखें मलिनता से शुद्ध हों, तुम में कभी बुराई और विद्रोह की योजना न होने पाए। चाहिए कि तुम उस ख़ुदा के पहचानने के लिए बहुत कोशिश करो जिसका पाना सर्वथा मुक्ति और जिसका मिलना सर्वथा आज़ादी है। वह ख़ुदा उसी प्रकट होता है जो दिल की सच्चाई और प्रेम से उसे ढूंढता है। वह उसी पर चमकार करता है जो उसी का हो जाता है। वे दिल जो पवित्र हैं, वे उसका शासन केन्द्र हैं और वे जीभें जो झूठ, गाली और डींगे मारने से शुद्ध हैं और उसकी वह्यी का स्थान हैं, और प्रत्येक जो उसकी प्रसन्नता में फ़ना होता है उस की चमत्कारपूर्ण क़ुदरत का द्योतक हो जाता है। यह नमूना उस शिक्षा का है जो उन्नीस वर्ष से इस जमाअत को दी जाती है। इसलिए मैं विश्वास करता हूं कि यह जमाअत ख़ुदा से डरने वाली और बर्तानवी सरकार की आज्ञाकारी, कृतज्ञ और मानव जाति की हमदर्द है। इनमें वहशियों वाला जोश नहीं, इनमें दरिन्दगी की आदतें नहीं। यदि सरकार के उच्चधिकारी एक थोड़ा सा कष्ट करके मेरी उन्नीस वर्ष की पुस्तकों को ध्यानपूर्वपक देखें तो वे उस शिक्षा के जो मैंने नमूने के तौर पर लिखी है मेरी अधिकांश पुस्तकों में पाएंगे। कोई मुरीद, मुरीद नहीं रह सकता जब तक अपने धर्म-गुरू में कथन और कर्म की समानता न पाए। फिर मेरा कथन तो यह हो जो मैंने उसका नमूना लिखा है और मेरे कर्म उसके विपरीत हों तो बुद्धिमान मनुष्यों का विश्वास मुझ पर क्योंकर रह सकता है। हालांकि मेरी जमाअत में बहुत सा भाग बुद्धिमानों और शिक्षा प्राप्त लोगों का है। उनमें कुछ लोग सरकार के प्रतिष्ठित पदों पर हैं। अर्थात् तहसीलदार, एकस्ट्रा असिसटेन्ट, वकील, डॉक्टर,

असिस्टेण्ट सर्जन, पंजाब के प्रतिष्ठित अमीर, रईस और व्यापारी हैं, जिन के नाम कभी-कभी मैं प्रकाशित करता रहता हूं। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि इस से अधिक कोई नीचता नहीं कि किसी की शिक्षा कुछ हो और गुप्त कार्रवाइयां कुछ और हों। अत: क्या नेक दिल और बुद्धिमान मनुष्य एक पल के लिए भी ऐसे दुष्ट के साथ रह सकते हैं। सरकार के लिए यह बात अत्यन्त सन्तोषजनक है कि मेरी जमाअत के लोग, मूर्ख, वहशी, गुण्डे, बदमाश, और बदचलन लोग नहीं हैं अपितु वे ऐसे नेक इन्सान और सदाचार में ख्याति प्राप्त हैं जो कई उनमें से सरकार की दृष्टि में सदाचार, स्वभाव की सरलता, हार्दिक पवित्रता और सरकार की शुभेच्छा में मान्य हैं और सरकार की ओर से प्रतिष्ठित पदों पर सम्मानित हैं। **सर सय्यद अहमद खां** साहिब के. सी. एस. आई० ने जो अपने अन्तिम समय में अर्थात् मृत्यु से कुछ समय पूर्व मेरे बारे में एक गवाही प्रकाशित की है। उस से उच्च सरकार समझ सकती है कि उस प्रवीण और इन्सान को पहचानने वाले व्यक्ति ने मेरे तरीक़े और आचरण को हार्दिक तौर पर पसन्द किया है। अत: हाशिए में उनके वाक्यों को दर्ज करता हूं।★

★हाशिया - "मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियनी"

"मिर्ज़ा साहिब ने जो विज्ञापन 25 जून 1897 ई० को जारी किया है उस विज्ञापन में मिर्ज़ा साहिब ने एक अत्यन्त सूक्ष्म उत्तम वाक्य अंग्रेज़ी सरकार की शुभेच्छा और वफ़ादारी के बारे में लिखा है। हमारे नज़दीक प्रत्येक मुसलमान को जो अंग्रेज़ी सरकार की प्रजा है ऐसा ही होना चाहिए जैसा मिर्ज़ा साहिब ने लिखा है। इसलिए हम इस वाक्य को अपने अखबार में छापते हैं। मिर्ज़ा साहिब लिखते हैं कि "अंग्रेज़ी सरकार की शुभेच्छा के बारे में मुझ पर जो प्रहार किया गया है यह प्रहार भी केवल शरारत है। रोम के बादशाह की वास्तविकताएं स्वयं

अब कलाम का सारांश यह कि मेरी शिक्षा यही है जो यहां मैंने नमूने के तौर पर लिखी है। मेरी जमाअत सम्मानित और दीन प्रकृति, तथा नेक चलन मनुष्यों का वह समूह है कि मैं कदापि सोच नहीं सकता कि सरकार उनके बारे में यह राय व्यक्त करे कि ये लोग अपने चालचलन और आचरण की दृष्टि से ख़तरनाक या संदिग्ध हैं। यह मेरे

शेष हाशिया - अपने स्थान पर हैं परन्तु इस सरकार के अधिकार भी हमारे सर पर प्रमाणित हैं और कृतघ्नता एक बेईमानी का प्रकार है।

हे मूर्खो! अंग्रेज़ी सरकार की प्रशंसा तुम्हारी तरह मेरी क़लम से कपटता पूर्वक नहीं निकलती अपितु मैं अपनी आस्था और विश्वास से जानता हूं कि वास्तव में ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से इस सरकार की अमन पूर्ण हुकूमत होने का मेरे नज़दीक और क्या सबूत हो सकता है कि ख़ुदा तआला ने यह पवित्र सिलसिला इस सरकार के अन्तर्गत चलाया है। वे लोग मेरे नज़दीक अत्यन्त कृतघ्न हैं जो अंग्रेज़ी पदाधिकारियों के सामने उनकी चापसूली करते हैं उनके आगे फिरते हैं और फिर घर में आकर कहते हैं कि जो व्यक्ति इस सरकार का धन्यवाद करता है वह काफ़िर है। याद रखो और खूब याद रखो कि हमारी यह कार्रवाई जो इस सरकार के बारे में की जाती है कटपपूर्ण नहीं है और कपटाचारियों पर अल्लाह की लानत। अपितु हमारी आस्था यही है जो हमारे हृदय में है।''

(अलीगढ़ इन्स्टीटयूट गज़ट तहज़ीबुल अख़लाक़ सहित 24 जुलाई 1897 ई०)

अंग्रज़ी सरकार की शुभेच्छा का यह निबंध मैंने उस समय प्रकाशित किया था जिन दिनों में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी और दूसरे लोगों ने रूम के बादशाह की प्रशंसा में निबंध लिखे थे और इस सरकार की शुभेच्छा के कारण काफ़िर ठहराया था। सय्यद अहमद खान साहिब ख़ूब जानते थे कि मैं सरकार का कितना शुभचिन्तक और अमन प्रिय मनुष्य हूं। इसीलिए मैंने डॉक्टर क्लार्क के मुक़द्दमे में सय्यद अहमद साहिब को अपनी सफाई का गवाह लिखवाया था। इसी से

सिलसिले का सौभाग्य है कि वहशी और मूर्खों और दुष्कर्मियों ने मेरी ओर रूजू नहीं किया, अपितु सभ्य, सम्मानित, शिक्षित, देशी अफ़सर और अच्छे-अच्छे पदों के सरकारी कर्मचारियों से मेरी जमाअत भरी हुई है और संकीर्ण विचारों के पक्षपाती और अनपढ़ मुसलमान जो वहशी और तामसिक भावनाओं के नीचे दबे हुए और अंधविश्वासी हैं और इस जमाअत से कुछ संबंध नहीं रखते। अपितु संकीर्णता और वैर की दृष्टि से देखते हैं और दिल दुखाने वाली योजनाओं में व्यस्त हैं और काफ़िर-काफ़िर कहते हैं।

तृतीय शाखा मेरे मामलों की जिसको सरकार की सेवा तक पहुंचाना बुहत आवश्यक है। मेरे वे इल्हामी दावे हैं जो धर्म के बारे में मैंने व्यक्त किए हैं जिनको कुछ दुष्ट स्वार्थ परायण लोग खतरनाक रंग में अपनी पत्रिकाओं और अख़बारों में लिखते हैं और वास्तविकता के विरुद्ध बातें करते हैं तथा झूठ से काम लेते हैं। मैं विश्वास रखता हूं कि मुझे अपनी कुशल सरकार के सामने इस बात को तर्कपूर्ण तौर पर लिखने की अधिक आवश्यकता नहीं कि वह ख़ुदा जो इस संसार का बनाने वाला और भावी जीवन की अनश्वर आशाएं तथा ख़ुश -ख़बरियां देने वाला है। उसका सदैव से यह प्रकृति का नियम है कि लापरवाह लोगों की मारिफ़त अधिक करने के लिए अपने कुछ बन्दों को अपनी ओर से इल्हाम प्रदान करता है और उन से बात करता है और उन पर अपने आकाशीय निशान प्रकट करता है और इस प्रकार वह ख़ुदा को रूहानी आंखों से देखकर तथा विश्वास और प्रेम से परिपूर्ण होकर इस योग्य हो जाते हैं कि वे दूसरों को भी जीवन के उस झरने की ओर खींचें जिस से

वे पीते हैं। ताकि लापरवाह लोग ख़ुदा से प्रेम करके अनश्वर मुक्ति के मालिक हों और प्रत्येक समय में जब दुनिया में ख़ुदा का प्रेम ठण्डा हो जाता है और लापरवाही के कारण से वास्तविक आन्तरिक पवित्रता में विकार आ जाता है तो ख़ुदा किसी को अपने बन्दों में से इल्हाम देकर दिलों को शुद्ध करने के लिए खड़ा कर देता है। अत: इस युग में इस कार्य के लिए उसने जिस व्यक्ति को अपने हाथ से साफ़ करके खड़ा किया है वह यही ख़ाकसार है। और यह ख़ाकसार ख़ुदा के उस पवित्र और मुक़द्दस बन्दे की पद्धति पर हृदयों में वास्तविक पवित्रता के बीजारोपण के लिए खड़ा किया गया है जो आज से लगभग उन्नीस सौ वर्ष पूर्व रोमी सरकार के युग में गलील की बस्तियों में वास्तवकि मुक्ति प्रस्तुत करने के लिए खड़ा हुआ था और फिर पिलातूस की हुकूमत में यहूदियों के बहुत से कष्ट पहुचांने के बाद उसको ख़ुदा की अनादि सुन्नत के अनुसार उन देशों से हिजरत करना पड़ी और वह हिन्दुस्तान में आए ताकि उन यहूदियों को ख़ुदा तआला का सन्देश पंहुचाएं जो बाबिल के उपद्रव के समय इन देशों में आए थे और एक सौ बीस वर्ष की आयु में इस अस्थायी दुनिया को छोड़कर अपने वास्तविक प्रियतम से जा मिले और कश्मीर के इलाके को अपने पवित्र मज़ार से हमेशा के लिए गर्व प्रदान किया। **क्या ही सौभाग्यशाली है श्रीनगर** और अन्मोज़: और ख़ानयार का मुहल्ला जिस की पवित्र मिट्टी में उस शहज़ादे ख़ुदा के पवित्र नबी ने अपना पवित्र शरीर धरोहर किया और कश्मीर के बहुत से रहने वालों को अनश्वर जीवन और वास्तविक मुक्ति से हिस्सा दिया। ख़ुदा का प्रताप हमेशा उसके साथ

हो। आमीन। अतः जैसा कि वह शहज़ादा नबी ने दुनिया में गरीबी और निराश्रयता और शालीनता का नमूना दिखलाया। इस युग में ख़ुदा ने चाहा कि उसके नमूने पर **मुझे** भी जो अमीरी और हुकूमत के ख़ानदान से हूं और बाह्य तौर पर भी उस शहज़ादे अल्लाह के नबी की हालतों से समानता रखता हूं उन लोगों में खड़ा करे जो फ़रिश्तों के शिष्टाचार से बहुत दूर जा पड़े हैं। तो इस नमूने पर मेरे लिए ख़ुदा ने यही चाहा है कि मैं ग़रीबी औऱ **दरिद्रता** से दुनिया में रहूं। ख़ुदा के कलाम में हमेशा से वादा था कि ऐसा इन्सान दुनिया में पैदा हो। इसी दृष्टि से ख़ुदा ने मेरा नाम मसीह मौऊद रखा। अर्थात् एक व्यक्ति जो ईसा मसीह के शिष्टाचार के साथ समरंग है। ख़ुदा ने मसीह अलैहिस्सलाम को रोमी हुकूमत के अधीन स्थान दिया था और उस हुकूमत ने उन के पक्ष में कोई जान बूझ कर अत्याचार नहीं किया परन्तु यहूदियों ने जो उनकी क़ौम थे बहुत अत्याचार किया, बहुत अपमान किया और प्रयास किया कि हुकूमत की दृष्टि में उसे बाग़ी ठहरा दें। परन्तु मैं जानता हूं कि हमारी यह हुकूमत जो बर्तानवी हुकूमत है ख़ुदा इसे सलामत रखे रोमियों की अपेक्षा न्याय के कानून बहुत साफ़ और उसके अधिकारी पिलातूस से अधिक दक्ष, प्रतिभा और न्याय का प्रकाश अपने दिल में रखते हैं और इस हुकूमत के न्याय की चमक रोमी हुकूमत की अपेक्षा उच्च स्तर पर है। अतः ख़ुदा तआला की कृपा की कृतज्ञता है कि उसने ऐसी हुकूमत की सहायता की छाया के नीचे मुझे रखा है जिसकी जांच-पड़ताल का पल्लः सन्देहों के पल्ले से बढ़ कर है।

इसलिए मसीह मौऊद का नाम जो आकाश से मेरे लिए निर्धारित

किया गया है उसके मायने इस से अधिक और कुछ नहीं कि मुझे समस्त नैतिक हालतों में क़ायम रहने वाले ख़ुदा ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का नमूना ठहराया है ताकि अमन और नर्मी के साथ लोगों को रूहानी जीवन प्रदान करूं। मैंने इस नाम के मायने अर्थात् मसीह मौऊद के केवल आज ही इस प्रकार से नहीं किए अपितु आज से उन्नीस वर्ष पूर्व अपनी पुस्तक बराहीन अहमदिया में भी यही मायने किए हैं।

संभव है कि कई लोग मेरी इन बातों पर हंसें या मुझे पागल और दीवाना कहें। क्योंकि ये बातें दुनिया की समझ से बढ़कर है और दुनिया इनको पहचान नहीं सकती। विशेष तौर पर प्राचीन फ़िर्क़ों के मुसलमान जिन के ऐसी भविष्यवाणियों के बारे में ख़तरनाक सिद्धान्त हैं। यह बात स्मरण रखने योग्य है कि मुसलमानों के प्राचीन फ़िर्क़ों को एक ऐसे महदी की प्रतीक्षा है जो हुसैन की मां फ़ातिमा की सन्तान में से होगा और ऐसे मसीह की भी प्रतीक्षा है जो उस महदी से मिलकर इस्लाम के विरोधियों से लड़ाइयां करेगा। परन्तु मैंने इस बात पर बल दिया है कि ये समस्त विचार निरर्थक, मिथ्या और झूठ हैं। और ऐसे विचारों के मानने वाले बड़ी ग़लती पर हैं। ऐसे महदी का अस्तित्त्व एक काल्पनिक अस्तित्त्व है जो अनभिज्ञता और धोखे से मुसलमानों के हृदयों में जमा हुआ है। और सच यह है कि बनी फ़ातिमा से कोई महदी आने वाला नहीं और ऐसी समस्त हदीसें बनावटी और निराधार हैं। जो संभवत: अब्बासियों की हुकूमत के समय में बनाई गई हैं। और सही और सच केवल इतना है कि एक व्यक्ति ईसा अलैहिस्सलाम के नाम पर आने वाला वर्णन

किया गया है कि जो न लड़ेगा और न ख़ून करेगा तथा ग़रीबी और दरिद्रता, सहिष्णुता और सन्तोषजनक तर्कों द्वारा दिलों को सच की ओर फेरेगा। अत: ख़ुदा ने मुझे खुले-खुले कलाम और निशानों के साथ ख़बर दी है कि वह व्यक्ति तू ही है। और उसने मेरे सत्यापन के लिए आकाशीय निशान उतारे हैं तथा ग़ैब के भेद और आने वाली बातें मुझ पर प्रकट की हैं और मुझे वे अध्यात्म ज्ञान प्रदान किए हैं कि दुनिया उनको नहीं जानती। और यह मेरी आस्था कि कोई खूनी महदी दुनिया में आने वाला नहीं। समस्त मुसलमानों से पृथक आस्था है तथा मैंने इस आस्था को अपनी सम्पूर्ण जमाअत और लाखों लोगों में प्रकाशित किया है। और यह मुसलमानों की आशाओं के विरुद्ध है। निस्सन्देह उनकी आस्थाएं ऐसी थीं कि जो वहशियों जैसे जोशों को पैदा करतीं तथा सभ्यता और शालीनता से दूर डालती थीं और विचार करने वाला समझ सकता है कि ऐसी आस्थाओं का मनुष्य एक खतरनाक मनुष्य होता है। तो ख़ुदा ने जो कृपालु और दयालु है मेरे प्रादुर्भाव से मैत्री की बुनियाद डाली। और मेरी जमाअत के हृदयों को उन व्यर्थ आस्थाओं से ऐसा धो दिया है जैसे एक कपड़ा साबुन से धोया जाए। अत: यही कारण है कि ये लोग मुझ से शत्रुता रखते हैं। और जिस प्रकार यहूदियों की आशाओं के अनुसार हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम बादशाह हो कर न आए और न ग़ैर क़ौमों से लड़े। अन्तत: यहूदियों ने उन पर अत्याचार करना आरंभ किया और कहा कि यह वह नहीं है जिसकी हमें प्रतीक्षा थी। यही कारण यहां उत्पन्न हो गया है। हां इसके साथ दूसरे मतभेद भी हैं अत: इन लोगों का एक यह भी मत है कि यथाशक्ति

ग़ैर क़ौमों से वैर रखा जाए और यदि अवसर मिले तो उन की हानि भी की जाए। परन्तु मैं कहता हूं कि कोई मनुष्य कदापि मुसलमान नहीं बन सकता जब तक दूसरों की ऐसी हमदर्दी नहीं करता जैसा कि अपने नफ़्स के लिए। और मेरी यही नसीहत है कि हृदयों को साफ करो। और समस्त मानवजाति की हमदर्दी करो और किसी की बुराई न चाहो कि उच्च सभ्यता यही है। खेद कि ये लोग दूसरी क़ौमों से प्रतिशोध लेने के लिए बहुत लोलुप हैं। परन्तु मैं कहता हूं कि क्षमा और माफ़ करो और वैर रखने वाले तथा कपटाचारियों की प्रकृति वाले न बनो। पृथ्वी पर दया करो ताकि आकाश से तुम पर दया हो। मैंने न केवल कहा अपितु करके दिखाया और मैंने कदापि पसन्द नहीं किया कि जो व्यक्ति बुराई का इरादा करता है उसके लिए मैं भी बुराई का इरादा करूं। उदाहरणतया डॉक्टर क्लार्क ने क़त्ल करने के लिए क़दम उठाने का आरोप मुझ पर लगाया था जो अदालत में सिद्ध न हुआ अपितु उसके विपरीत प्रसंग पैदा हुए तब कप्तान डगलस साहिब मजिस्ट्रेट ज़िला गुरदासपुर ने मुझ से पूछा कि क्या आप डॉक्टर क्लार्क पर नालिश करना चाहते हैं? तो मैंने साफ़ तौर पर कहा कि नहीं, अपितु मैंने उन ईसाइयों पर नालिश करने से भी मुंह फेर लिया जो अदालत की छानबीन के अनुसार अपराधी ठहरते थे। यदि क्षमा और माफ़ करना मेरा धर्म न होता तो इतना कष्ट उठाने के बाद मैं अवश्य नालिश करता।

फिर जब अंजुम हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर के द्वारा इस इलाक़े के मुसलमानों ने पुस्तक 'उम्महातुल मोमिनीन' के लेखक की पकड़ करानी चाही और इस उद्देश्य के लिए लेफ्टीनेण्ट बहादुर की सेवा

में कई मेमोरियल भेजे और बहुत जोश प्रकट किया तो उस समय भी मैंने इन के विरुद्ध मेमोरियल भेजा और साफ लिखा कि हम 'उम्माहतुल मोमिनीन' के लेखक से प्रतिशोध कदापि नहीं चाहते। हां उचित तौर पर खण्डन लिखना हमारा कर्त्तव्य है। अत: इन मामलों में इन लोगों और उनके मौलवियों से मेरा सदैव मतभेद रहा है जिस से इन को बहुत कष्ट है। परन्तु मैं इन से कुछ दुश्मनी नहीं रखता।* और बहरहाल इनको दयनीय जानता हूं। और उस व्यक्ति से अधिक दया योग्य कौन व्यक्ति हो सकता है जो सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग को छोड़ता है। एक मतभेद हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बारे में है जिस से ये लोग हमेशा अप्रसन्न रहे। मैंने एक विस्तृत छान-बीन से सिद्ध किया है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए हैं। और मुझे इस बात के बड़े ठोस सबूत मिले हैं कि आप को ख़ुदा तआला ने सलीब से मुक्ति देकर हिन्दुस्तान की ओर उन यहूदियों को (ख़ुदा की ओर) बुलाने के लिए भेजा जो बुख़्तनसर के हाथ से निकल कर फारस, तिब्बत और कश्मीर में आकर बस गए थे। अत: आप ने उन देशों में एक लम्बे समय तक रहकर और ख़ुदा का सन्देश पहुंचा कर अन्त में श्रीनगर में मृत्यु पाई और आप का मज़ार मुक़द्दस मुहल्लाह ख़ानयार श्रीनगर में

* डॉक्टर क्लार्क के मुकद्दमे में जब मौलवी मुहम्मद हुसैन डॉक्टर क्लार्क की ओर से गवाह हो कर आया तो मेरे वकील मौलवी फ़ज़लदीन साहिब ने मुहम्मद हुसैन के बारे में एक ऐसे प्रश्न की मुझ से इजाज़त मांगी जिससे अदालत में मुहम्मद हुसैन का बहुत अपमान होता था। तब मैंने उनको ऐसे प्रश्न से मना कर दिया और रोक दिया। यदि मैं दुनिया में किसी से दुश्मनी रखता तो ऐसा क्यों करता। इसी से

मौजूद है जो शहज़ादा **नबी यूज़**★ **आसफ़** का मज़ार कहलाता है। यसू का नाम जीसस के नाम की तरह भाषा के मिल-जुल जाने के कारण यूज़ आसफ़ हो गया।

चौथी शाखा यह है कि इन दावों के बाद क़ौम के उलेमा ने मेरे साथ क्या बर्ताव किया? इसका विवरण यह है कि मेरे मसीह मौऊद के दावे को सुनकर और इस बात की सूचना पाकर कि मैं उनके उस महदी के आने से इन्कारी हूं जिसके बारे में बहुत से वहशियों जैसे क़िस्से उन्होंने बना रखे हैं और उसे पृथ्वी पर ख़ून की नदियां बहाने वाला माना गया है। इन मौलवियों में से एक व्यक्ति मुहम्मद हुसैन नाम ने जो पत्रिका इशाअतुस्सुन्नः और निवासी बटाला, ज़िला गुरदासपुर है मुझ पर एक कुफ्र का फ़त्वा लिखा और बहुत से मौलवियों के उस पर हस्ताक्षर कराए और मुझे काफ़िर तथा दज्जाल ठहराया यहां तक कि यह फ़त्वा दिया गया कि यह व्यक्ति क़त्ल करने योग्य है और इनका माल लूट लेना वैध और इनकी स्त्रियों को बलात अपने क़ब्ज़े में लेकर उन के साथ निकाह कर लेना ये सब बातें सही हैं अपितु पुण्य का कारण हैं।★

★ कश्मीरियों की कुछ प्रतिष्ठित क़ौमों के नाम के साथ जीउ का शब्द एक हमेशा की क़ौमी यादगार है जो उनको बनी इस्राईली सिद्ध करती है क्योंकि जीउ के अर्थ यहूदी के ही हैं। और यह शब्द 'जीउ' यहूदी होने के अर्थों में भी इसी प्रकार बनाया गया है. इस ज़बरदस्त सबूत क़ौमी नामों की समानता के अतिरिक्त प्रसिद्ध फ्रांसीसी पर्यटक डॉक्टर बर्नियर ने अपने सफरनामः में शक्तिशाली तर्कों और बड़े-बड़े अन्वेषकों की गवाही से सिद्ध किया है कि कश्मीरी वास्तव में बनी इस्राईल ही हैं। इसी से।

★ मुहम्मद हुसैन बटालवी का असल मज़हब यही है कि महदी लड़ाइयां करने

अत: 29, रमज़ान 1308 हिज्री के विज्ञापन हक़्क़ानी प्रेस लुधियाना से प्रकाशित और 'सैफ़-ए-मस्लूल' ईजरटन प्रेस रावलपिण्डी से प्रकाशित की पीठ पर जो मुहम्मद हुसैन की तहरीर से लिखे गए हैं। ये दोनों फ़त्वे मौजूद हैं। परन्तु जब अंग्रेज़ी सरकार के रोब से उन फ़त्वों पर अमल नहीं हो सका तो मुहम्मद हुसैन ने एक और उपाय सोचा⁕ कि इस व्यक्ति को गन्दी गालियों और दिल दुखाने वाली बातों से हमेशा कष्ट देना चाहिए। जैसा कि उसने अपनी पत्रिका इशाअतुस्सुन्नः 1898 ई० में प्रकाशित में कई जगह इस बात को स्वयं व्यक्त किया है। इस प्रकार की गालियों का सिलसिला जारी रखने के लिए एक चालाक व्यक्ति को जिन का नाम मुहम्मद बख़्श जाफ़र ज़टली है और लाहौर में रहता है नियुक्त किया और हर प्रकार के गन्दे विज्ञापन स्वयं लिख कर उसके नाम पर छपवाए। और पर्दे के पीछे (गुप्त तौर पर) सब कार्रवाई स्वयं मुहम्मद हुसैन ने की और अपनी इस कार्रवाई से वह लोगों को सूचना भी देता रहा है और अपनी पत्रिकाओं में भी शेख़ी के तौर पर यह कार्य अपनी ओर सम्बद्ध करता रहा है और ये समस्त विज्ञापन जो नितान्त चालाकी और गालियों से एक वर्ष या कुछ अधिक समय से मुहम्मद

वाला आने वाला है। परन्तु वह सरकार को केवल झूठ के तौर पर यह कहता है कि ऐसे महदी का मैं क़ाइल नहीं हूं। हालांकि वह बहुत बार व्यक्त कर चुका है कि क़ाइल है। यदि सरकार दूसरे मौलवियों को एकत्र करके पूछे कि यह व्यक्ति उनके पास महदी के बारे में क्या आस्थाएं वर्णन करता है तो शीघ्र सिद्ध हो जाएगा कि यह व्यक्ति सरकार को क्या कहता है और अपने भाइयों अर्थात् दूसरे उलेमा को महदी के बारे में क्या कहता है। इसी से।

⁕देखो इशाअतुस्सुन्नः न. 5, पृष्ठ 146, 154, 155 इसी से

हुसैन प्रकाशित कर रहा है। यह अत्यन्त बुरे ढंग से गन्दी से गन्दी शैली सें लिखे जाते हैं। और इन विज्ञापनों में मेरे अपमान और अनादर का कोई पहलू उठा नहीं रखा और मेरी समस्त मर्यादा को खाक़ में मिलाना चाहा है। और ऐसे गन्दे और अपवित्र आरोपों पर आधारित हैं कि मैं सोच नहीं सकता कि इस कठोरता और बेशर्मी का बर्ताव किसी अधम से अधम क़ौम के व्यक्ति ने अपने किसी विरोधी के साथ किया हो। इन विज्ञापनों में से जो 12 अगस्त 1898 का विज्ञापन है जो ताजुलहिन्द प्रेस में छपा है ऐसा ही एक दूसरा विज्ञापन जो 25 सितम्बर 1898 ई० में फ़ख़रुद्दीन प्रेस लाहौर में छपा है और ऐसा ही एक तीसरा विज्ञापन तथा परिशिष्ट 11, जून 1897 ई० का जो इसी प्रेस में छपा है। इन चारों का कुछ निबंध यहां नमूने के तौर पर दर्ज करता हूं ताकि शासकों को ज्ञात हो कि मेरे अपमान का कहां तक इरादा किया गया है। और न एक माह, न दो माह अपितु एक वर्ष से ऐसे गन्दे विज्ञापन प्रकाशित कर रहे हैं जिन के निरन्तर ज़ख़्मों के बाद★ मुझे 21 नवम्बर 1898 को विज्ञापन लिखना पड़ा जिस में झूठे का अपमान ख़ुदा तआला से मांगा है और मुहम्मद हुसैन के ये चारों विज्ञापन जो मुझे अपमानित करने के लिए जाफ़र ज़टली के नाम से निकाले गए इन में बहुत कठोर, गन्दे और अपवित्र शब्द प्रयोग किए गए हैं। अर्थात् मेरे बारे

★यह विज्ञापन मुबाहल: 21 नवम्बर 1898 ई० उस समय तक प्रकाशित नहीं किया जब तक कि कई विज्ञापन इन लोगों की ओर से मुबाहले के निरन्तर निवेदन मेरे पास नहीं पहुंचे। अत: इन विज्ञापनों के अतिरिक्त एक पत्र जाफ़र ज़टली 19, नवम्बर 1898 और पांच विज्ञापन निरन्तर एक के बाद दूसरा मुबाहले के निवेदन के बारे में मुहम्मद हुसैन ने स्वयं प्रकाशित कराए। इसी से।

में यह लिखा है कि "इस व्यक्ति की जोरू की इस के कुछ मुरीदों से दोस्ती है।" और फिर ठट्ठे से स्वयं को मुल्हम ठहरा कर मेरे बारे में लिखा है कि हमें इल्हाम हुआ है कि इस "व्यक्ति की जोरू मुहम्मद बख़्श जाफ़र ज़टली से निकाह करेगी"। और फिर मेरे बारे में ठट्ठे से लिखता है कि हमें इल्हाम हुआ है कि "क़ादियानी एक सख़्त मुक़द्दमे में गिरफ़्तार होकर पैरों में बेड़ियां डालकर अंग्रेज़ों की क़ैद में डाला जाएगा और देश से निष्कासित होगा और क़ैद की अवस्था में बिल्कुल दीवाना और हवास खो बैठेगा और उसके नीचे से एक नासूर का फोड़ा पैदा होगा तथा उसे कोढ़ हो जाएगा और इस के शरीर में असंख्य कीड़े पैदा होंगे और इसका रूप बिल्कुल विकृत हो जाएगा और इसकी प्यारी पत्नी कुछ मुरीदों से यारी करेगी और वह आवारा होकर क़ादियानी से तलाक़ प्राप्त करेगी और फिर मुहम्मद बख़्श जाफ़र ज़टली से उसका निकाह होगा और मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन मुहम्मद हुसैन निकाह पढ़ाने वाले होंगे★ और अन्ततः क़ादियानी आंखों से अंधा, कानों से बहरा, जीभ से गूंगा, आत्महत्या करके फ़िन्नार वस्सक़र हो जाएगा अर्थात् नर्क में पड़ेगा।" और फिर ठट्ठे के तौर पर अन्त में लिखता है कि "ये सब इल्हाम पूरे हो चुके केवल निकाह शेष है।" और फिर मेरे बारे में तीसरे विज्ञापन में ठट्ठे से लिखता है कि "सुना है कि इस व्यक्ति को ताऊन हो गई और कुत्तों ने इसका मांस खाया।" और फिर जुलाई 1897 के पर्चे में मेरा चित्र **रीछ** का बनाया है।

★मौलवी मुहम्मद हुसैन ने अपने 1898 ई० के इशाअतुस्सुन्नः में बड़े उपहास के तौर पर लिखा है कि इनकी पत्नी का मुहम्मद बख़्श से मैं निकाह पढ़ूंगा। इसी से

इसके अतिरिक्त मुहम्मद हुसैन ने अपने इशाअतुस्सुन्नतः 1898 ई० में जगह-जगह मुझे दुष्कर्मी और अंग्रेजी सरकार का अशुभ चिन्तक और ख़ूनी ठहराया है। तो जबकि यह अन्याय मुहम्मद हुसैन और उसके गिरोह अर्थात् मुहम्मद बख़्श जाफ़र ज़टली इत्यादि का सीमा से अधिक हो गया और मुझे इस सीमा तक अपमानित किया गया कि अपमान का कोई ऐसा शब्द न छोड़ा जो मेरे बारे में प्रयोग न किया और फिर मुबाहले के लिए निरन्तर निवेदन भेजा तो अन्त में मैंने 21 नवम्बर 1898 को विज्ञापन जारी किया जिस का मतलब केवल यह था कि ख़ुदा तआला हम दोनों गिरोह में से उसे अपमानित करे जो झूठा है। और फिर उस विज्ञापन की व्याख्या 30 नवम्बर 1898 के विज्ञापन में और भी स्पष्टतापूर्वक कर दी तथा मुहम्मद हुसैन ने मेरे विज्ञापन 21 नवम्बर 1898 के बाद भी जगह-जगह मुझे बदनाम करना चाहा और मेरे विज्ञापन 21 नवम्बर 1898 ई० के झूठे तौर पर ये मायने किए कि इसमें मेरे क़त्ल करने की धमकी दी है। हालांकि उसी विज्ञापन में मैंने तीन स्थान पर स्पष्ट वर्णन कर दिया था कि यह विज्ञापन केवल झूठे के अपमान के लिए है हम दोनों सदस्यों में से कोई हो। और फिर मैंने यह सुन कर कि मुहम्मद हुसैन मेरे 21 नवम्बर के विज्ञापन के विरुद्ध मायने करता है। 30 नवम्बर 1898 का विज्ञापन इस उद्देश्य से प्रकाशित किया ताकि मुहम्मद हुसैन विपरीत अर्थ करके लोगों को धोखा न दे, परन्तु मैंने सुना है कि इसके बाद फिर भी वह धोखा देता रहा। एक बच्चा भी जो थोड़ी योग्यता रखता हो मेरे इन दोनों विज्ञापनों को देखकर जो 21 नवम्बर सन् 1898 और 30 नवम्बर 1898 में जारी हुए थे स्पष्ट तौर पर समझ सकता है कि

इन विज्ञापनों में किसी के क़त्ल करने की भविष्यवाणी नहीं है अपितु केवल झूठे के अपमान के लिए बद्-दुआ और इल्हाम है★ और यही उद्देश्य था जिसके कारण मैंने मुहम्मद हुसैन का विज्ञापन जो मुहम्मद बख़्श और अबुलहसन तिब्बती के नाम से जारी किया गया था 21 नवम्बर 1898 के विज्ञापन के साथ छाप भी दिया था। इस से मेरा यह उद्देश्य था ताकि मालूम हो कि मुहम्मद हुसैन ने केवल गालियों से मुझे अपमानित करना चाहा है और मैं ख़ुदा से यह फ़ैसला चाहता हूं कि जो व्यक्ति हम में से झूठा है वह इसी प्रकार अपमानित हो। मैंने इस पुस्तक के अन्त में अपने दो विज्ञापनों अर्थात् 21 नवम्बर 1898 और 30 नवम्बर 1898 का अनुवाद अंग्रेज़ी में सम्मिलित कर दिया है। यह बात कि मैंने क्यों यह विज्ञापन 1898 लिखा और किस सही आवश्यकता के कारण मैं उसके लिखने का अधिकारी था इसका उत्तर अभी मैं दे चुका हूं कि मैं एक वर्ष से अधिक समय तक गन्दे विज्ञापनों का निशाना रहा अर्थात् मुहम्मद हुसैन और उसके गिरोह की ओर से मेरे बारे में निरन्तर एक वर्ष तक गालियों के विज्ञापन जारी होते रहे और उन विज्ञापनों में मेरा बहुत अपमान और अनादर किया गया और मुझे अपमानित करने में चरम सीमा तक कोशिशें की गईं। यहां तक कि मेरी औरतों पर केवल उपद्रवपूर्ण शरारत से दुष्कर्म और व्यभिचार का आरोप लगाया गया। इस स्तर के दिल

★इल्हाम جزاءسيئة بمثلها कि जो विज्ञापन 21 नवम्बर 1898 में दर्ज है यह प्रकट करता है कि झूठे का अपमान तो होगा परन्तु इसी प्रकार का जो उसने अपने कर्म से दूसरे सदस्य को पहुंचाया हो। अत: यहां अपमान के प्रकार मिस्ल (समान) की दृष्टि से ठहरा दिया गया है। इसी से

दुखाने और अपमान के समय जो इन्सानी स्वाभिमान को हरकत में लाता है मेरा अधिकार था कि मैं अदालत में नालिश करता परन्तु मैंने अपने फ़क़ीरों और सब्र करने वालों के तरीक़े के अनुसार कोई नालिश न की और एक वर्ष के लगभग ऐसे विज्ञापन जिन का एक एक शब्द मेरे अपमान के लिए लिखा गया था मुहम्मद हुसैन और उसके गिरोह ने डाक द्वारा मेरे पास क़ादियान में पहुंचाए। हालांकि मैं ऐसे गन्दे अख़बारों और विज्ञापनों का ख़रीदार न था। तो जबकि बार-बार इस प्रकार के गालियों और झूठे आरोपों से कष्ट दिया गया तो अन्ततः मैंने लम्बे समय के धैर्य के बाद नितान्त नेक नीयत से विज्ञापन 21 नवम्बर 1898 जो केवल इस निबंध पर आधारित था कि झूठे को ख़ुदा अपमानित करे। परन्तु उसी प्रकार के अपमान से जो उसने पहुंचाया जारी किया।

पांचवी शाखा वर्णन करने योग्य यह है कि मेरे इन दावों से पहले मेरे बारे में इन लोगों का क्या गुमान था और इन दावों के बाद क्यों इतनी शत्रुता ग्रहण की? अतः इस स्थान पर इतना लिखना पर्याप्त है कि शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्नः जो विरोधियों का प्रमुख है मेरे इन दावों से पहले मेरे बारे में उच्च स्तर का प्रशंसक था। मुझे एक नेक इन्सान, वली और मुसलमानों का गर्व तथा अंग्रेज़ी सरकार का उच्च स्तर का शुभ चिन्तक समझता था अतः वह अपने अख़बार इशाअतुस्सुन्नः जून-जुलाई, अगस्त 1884 में पृष्ठ 169 में मेरे बारे में लिखता है -

"यह व्यक्ति इस्लाम की आर्थिक सहायता, प्राणों द्वारा सहायता, क़लम के द्वारा, ज़बान के द्वारा, व्यवहारिक एवं मौखिक सहायता

में ऐसा दृढ़ संकल्प निकला है जिसका उदाहरण पहले मुसलमानों में बहुत ही कम पाया गया है।''

फिर इसी पत्रिका के पृष्ठ 176 में लिखता है कि -

''बराहीन अहमदिया के लेखक (अर्थात् इस ख़ाकसार) के हालात और विचारों से जितने हम परिचित हैं हमारे समकालीन ऐसे परिचित कम निकलेंगे। लेखक साहिब हमारे देश के हैं अपितु प्रारंभिक आयु के हमारे सहपाठी भी हैं। इनके बुज़ुर्गवार पिता मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा ने ग़दर 1857 ई० में सरकार का शुभ चिन्तक, प्राण क़ुर्बान करने वाला और वफ़ादार होना क्रियात्मक तौर पर भी सिद्ध कर दिखाया और पचास घोड़े सरकार की सहायता में दिए।''

और फिर पृष्ठ-177 और 178 में लिखा है कि -

''मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब दरवेश स्वरुप अंग्रेज़ी सरकार की शुभ चिन्ता में हमेशा व्यस्त रहे और उन्होंने अनेकों बार लिखा है कि यह सरकार मुसलमानों के लिए एक आसमानी बरकत का आदेश रखती है और दयालु ख़ुदावन्द ने इस सरकार को मुसलमानों के लिए एक दया-दृष्टि भेजी है। ऐसी सरकार से लड़ाई और जिहाद करना सर्वथा हराम (अवैध) है।''

ऐसा ही मुहम्मद हुसैन ने इशाअतुस्सुन्नः के कई और पर्चों में मेरे बारे में साफ तौर पर गवाही दी है कि -

''यह व्यक्ति गरीब प्रकृति, उपद्रवविहीन और अंग्रेज़ी सरकार का शुभ चिन्तक है।''

इस गवाही पर वर्षों तक और उस समय तक क़ायम रहा जब तक कि मैंने इन लोगों की उन आस्थाओं से इन्कार किया जो इन लोगों

के दिलों में जमी हुई हैं कि दुनिया में एक महदी आएगा और ईसाइयों से लड़ेगा और उसकी सहायता करने के लिए ईसा अलैहिस्सलाम आकाश से उतरेंगे और पृथ्वी पर किसी काफ़िर को नहीं छोड़ेंगे और काफ़िरों की दौलत मौलवियों और दूसरे मुसलमानों को मिलेगी तथा इतनी दौलत मिलेगी कि वे उसके रखने से असमर्थ हो जाएंगे। इन निराधार और व्यर्थ क़िस्सों को मैंने स्वीकार नहीं किया और बार-बार लिखा कि ये विचार क़ुर्आन और हदीस से सिद्ध नहीं और सर्वथा निरर्थक और ग़लत हैं। और न केवल इन्कार किया अपितु यह भी व्यक्त किया कि मैं ख़ुदा तआला के इरादे के अनुसार और उसके इल्हाम से मसीह मौऊद के नाम पर आया हूं और मैं लोगों पर प्रकट करता हूं कि सामान्य मुसलमानों की ये आस्थाएं कि फ़ातिमा कि संतान से एक महदी उठेगा और मसीह आसमान से उसकी सहायता के लिए आएगा। फिर वह पृथ्वी पर काफ़िरों के साथ लड़ेंगे तथा ईसाइयों के साथ उन की लड़ाइयां होंगी और मौलवियों तथा उनके समान विचार रखने वाले लोगों को इनाम देने के लिए बहुत सा माल एकत्र किया जाएगा। ये सब झूठे और निर्मूल विचार हैं अपितु ऐसी लड़ाइयां करने वाला कोई नहीं आएगा। केवल रूहानी तौर पर लापरवाह लोगों का सुधार अभीष्ट था। अत: मैं इस सुधार के लिए आया हूं। तो मेरा यह सदुपदेश इन लोगों को बहुत बुरा लगा **क्योंकि करोड़ों काल्पनिक रुपयों की हानि हो गई**। और लूट के मालों से बिल्कुल निराशा हो गई और मसीह मौऊद तथा महदी के स्थान पर एक ग़रीब व्यक्ति आया जो लड़ाइयों से मना करता और बग़ावत के अपवित्र मन्सूबों से रोकता और ग़रीबों जैसे जीवन की शिक्षा देता है। फिर ऐसा इन्सान इन लोगों

को क्यों अच्छा लगता। विवश होकर उसके क़त्ल और सलीब देने के लिए फ़त्वे लिखे गए। उसकी पत्नियों और उसकी जमाअत की स्त्रियों पर बल पूर्वक★ क़ब्ज़ा करना और उन से निकाह करना धार्मिक सिद्धान्त ठहराया गया। गालियां देना और झूठे आरोप लगाना और उसकी पत्नी की चर्चा करके गन्दे आरोपों से उसे आरोपित करना पुण्य का कार्य समझा गया और फिर दोबारा इन लोगों का क्रोध और प्रकोप इस बात से भी चमका कि मुहम्मद हुसैन ने अपनी एक पत्रिका में रोम के बादशाह की बहुत प्रशंसा की थी। उसके मुक़ाबले पर मैंने रोम के एक राजदूत की मुलाक़ात के बाद यह विज्ञापन दिया कि हमें रोम के बादशाह के बारे में अंग्रेज़ी सरकार के साथ अधिक वफ़ादारी और आज्ञापालन दिखाना चाहिए। इस सरकार के हमारे सर पर वे अधिकार हैं जो बादशाह के नहीं हो सकते। मेरे इस लेख पर मौलवियों ने बहुत शोर मचाया और बुरी-बुरी गालियां दीं तथा मेरे साथ **सर सय्यद अहमद खान** के. सी. एस. आई राय में सहमत हुए। जैसा कि मैं उनके कलाम को जिसको उन्होंने अपने अख़बार में प्रकाशित किया था इसी पुस्तक में लिख चुका हूं। मैं सच-सच कहता हूं इन कारणों के अतिरिक्त इन लोगों का मेरे साथ अन्य कोई शत्रुता का कारण नहीं है। अंग्रेज़ी सरकार के उच्च पदाधिकारी इन लोगों के विज्ञापनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर ज्ञात कर सकते हैं कि इन लोगों की दरिन्दगी किस सीमा तक पहुंच गई है और मेरी शिक्षा जो उन्नीस वर्ष से अपनी जमाअत को दे रहा हूं वह

★देखो पुस्तक सैफ़े मस्लूल पृष्ठ 32 और 40 एजरटीन प्रेस रावलपिण्डी से प्राकाशित बिना तिथि और विज्ञापन मौलवी मुहम्मद इत्यादि हक़्क़ानी प्रेस लुधियाना से प्रकाशित, दिनांक 29 रमज़ानुल मुबारक 1308 हिज्री। इसी से।

भी इस उपकारी सरकार से छुपी नहीं रह सकती। मैंने अपनी जमाअत के लिए अनिवार्य कर दिया है कि वे इन लोगों की बुराई का मुक़ाबला न करें और ग़रीबों जैसी पद्धति पर जीवन व्यतीत करें और अपने नफ़्स पर भी मैंने यही अनिवार्य किया है कि गन्दे आरोपों और झूठे इल्ज़ामों के मुक़ाबले पर ख़ामोश रहूं। इसी कारण से इन लोगों की बातों के मुकाबले पर हमेशा मैंने और मेरी जमाअत ने खामोशी ग्रहण की एक इन्साफ़ करने वाला विचार कर सकता है कि यह कितना दिल दुखाने वाला तरीक़ा था कि इस मुहम्मद हुसैन मौलवी ने मुहम्मद बख़्श जाफ़र ज़टली अपने दोस्त के माध्यम से मुझे यह विज्ञापन दिया कि इस व्यक्ति की पत्नी इसकी जमाअत से यारी अर्थात् अवैध संबंध रखती है। परन्तु मैं इस इल्ज़ाम को सुन कर खामोश रहा फिर एक दूसरे विज्ञापन में लिखा कि सुना है कि यह व्यक्ति मर गया और उसका मांस कुत्तों ने खाया। मैंने फिर भी सब्र किया फिर मेरे बारे में लिखा कि हमें इल्हाम हुआ है कि इसकी पत्नी आवारा होकर मुहम्मद बख़्श जाफ़र ज़टली से निकाह करेगी और मुहम्मद हुसैन निकाह पढ़ेगा फिर भी मैंने सब्र किया। फिर एक और विज्ञापन में मुझे एक रीछ बताकर एक चित्र रीछ का बनाया और उसके गले में रस्सा डाला और उसके साथ गालियां लिखीं। फिर एक अन्य विज्ञापन में यह इल्हाम प्रकट किया कि यह व्यक्ति क़ैद हो जाएगा और कोढ़ी हो जाएगा। फिर इसी मुहम्मद हुसैन ने इशाअतुस्सुन्नः में एक जगह लिखा कि यह व्यक्ति ख़ूनी है, दुष्कर्मी है और बाग़ी है। इन समस्त विज्ञापनों के बाद इन लोगों ने बहुत बार मुबाहले का निवेदन किया और उन निवेदनों में भी गालियां लिखीं। अन्त में नर्मी और विनम्रतापूर्वक मेरी ओर से 21 नवम्बर 1898 का

विज्ञापन निकला जिसका मतलब केवल यह था कि ख़ुदा हम दोनों में से झूठे को **अपमानित** करे परन्तु इल्हाम में अपमान के साथ मिस्ल (समान) की शर्त रखी गई है।

अतः इस समय तक मुझ में और उन में जो कुछ घटित हुआ उसका यही विवरण था जो मैंने वर्णन किया और मुहम्मद हुसैन तथा मुहम्मद बख़्श जाफ़र ज़टली के समस्त गन्दे विज्ञापन मेरे पास मौजूद हैं जिन का निबंध बतौर ख़ुलासा इस पुस्तक में लिख दिया गया है। और उनके प्रकाशन की तिथि प्रेस के नाम सहित नीचे लिखता हूं -

विज्ञापन तिथि	नाम प्रेस	विवरण
11 जून 1897 ई०	ताजुल हिन्द लाहौर तकिया साधवां	इस विज्ञापन का शीर्षक 'परिशिष्ट अख़बार जाफ़र ज़टली' है शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्नः के संकेत से लिखा गया है जैसा कि कथित शेख़ ने इस बात को अपने इशाअतुस्सुन्नः तथा गवाहों के सामने स्वीकार किया है। इस विज्ञापन में बहुत गन्दी भविष्यवाणियां लिखी हैं।
26 जून 1897 ई०	"	यह भी शेख़ मुहम्मद हुसैन के इशारे से लिखा गया है।

23 जून 1897 ई०	"	यह भी शेख़ मुहम्मद हुसैन के इशारे से लिखा गया है।
26 मई 1897 ई०	"	इस विज्ञापन में क़त्ल की भी धमकी दी गई है।
20 अगस्त 1897 ई०	"	यह भी मुहम्मद हुसैन के इशारे से लिखा गया है और गालियों से भरपूर है।
7 अप्रैल 1897 ई०		इसके पृष्ठ-4, कालम 3 में लिखा है कि मिर्ज़ा मर गया और उसकी लाश अजायब घर में रखी गई।★
इशाअतुस्सुन्नः मुहम्मद हुसैन बटालवी 1891 ई० से लेकर 1898 ई० तक		इन समस्त पत्रिकाओं में जो 1891 से 1898 तक हैं मौलवी मुहम्मद हुसैन ने प्रत्येक प्रकार से मुझ पर इल्ज़ाम लगाए, गालियां दीं और यह भी इक़रार किया कि मुहम्मद बख़्श ज़टली के समस्त गन्दे विज्ञापन मेरे इशारे और शिक्षा से हैं। और मुहम्मद बख़्श की बहुत प्रशंसा की।

★केवल यही बात नहीं कि मुहम्मद हुसैन ने अपने इशाअतुस्सुन्नः में स्वीकार किया है कि ये सब गालियां उसकी प्रेरणा से तथा उसकी शिक्षा से दी हुई हैं। अपितु इस बात पर कुछ प्रतिष्ठित आदमी गवाह भी हैं कि मुहम्मद हुसैन इन विज्ञापनों के बारे में अपने हाथ से लिखा हुआ मसौदा देता रहा है। इसी से।

अन्त में यह बात अधिकारियों के ध्यान देने योग्य है कि सैकड़ों प्रतिष्ठित और सभ्य लोग मेरे पवित्र जीवन के गवाह हैं और स्वयं मेरी जमाअत के प्रतिष्ठित पदाधिकारी जो सरकार की नज़र में विशेष तौर पर विश्वसनीय हैं ऐसा ही जो प्रतिष्ठित रईस और व्यापारी हैं मेरे नेक तथा सभ्य चाल-चलन पर साक्ष्य दे सकते हैं और न मैं ऐसे ख़ानदार से हूं कि जो अंग्रेज़ी सरकार की नज़र में कभी आपत्तिजनक था और न कोई सिद्ध कर सकता है कि कभी कोई आपराधिक कार्य मुझ से प्रकटन में आया तथा मेरी जमाअत में अधिकतर प्रतिष्ठित पदाधिकारी, रईस और सभ्य शिक्षा प्राप्त हैं जो किसी दुष्कर्मी के साथ मुरीद होने का संबंध नहीं रख सकते। और मुहम्मद हुसैन से मेरी कोई व्यक्तिगत शत्रुता नहीं और न कोई आर्थिक भागीदारी। केवल धार्मिक आस्थाओं का मतभेद है। चूंकि इन लोगों ने लगभग एक वर्ष से गालियां देना और गन्दे विज्ञापन निकालना अपना तरीका बना लिया है। इसलिए इनके बहुत से विज्ञापनों के पश्चात् जो लगभग एक वर्ष तक मेरे नाम आते रहे और उनके निरन्तर मुबाहले के निवेदन के पश्चात् जो विज्ञापनों द्वारा किए गए मेरी नेक नीयत और ख़ुदा के डर और सहिष्णुता ने मुझे यह मार्गदर्शन किया कि गालियों की बजाए ख़ुदा तआला से बतौर मुबाहला फैसला चाहूं और यह मुबाहले का तरीक़ा मैंने अपनी ओर से आविष्कृत नहीं किया अपितु यह हमेशा से इस्लाम में बतौर सुन्नत चला आता है। यह इस्लाम का तरीक़ा है कि जो फ़ैसला स्वयं न हो सके वह मुबाहले द्वारा ख़ुदा तआला पर डाला जाए। परन्तु मैंने किसी की मौत या किसी अन्य संकट के लिए यह विज्ञापन कदापि नहीं लिखा। विज्ञापन का सारांश केवल यह है कि

ख़ुदा तआला दोनों सदस्यों में से जो ज़ालिम हो उसको उसके समान अपमान पहुंचाए। मेरी आदत कदापि नहीं कि मैं किसी की मौत के बारे में स्वयं भविष्यवाणी करूं। कुछ आदमी जिन के बारे में इस से पूर्व भविष्यवाणी की गई थी जैसे डिप्टी आथम और पंडित लेखराम। इन लोगों ने स्वयं आग्रह किया था और बड़े आग्रह से अपने हाथ से लिखे थे और इस पर बल दिया था कि उनके बारे में भविष्यवाणी की जाए। और लेखराम ने मेरी भविष्यवाणी के अतिरिक्त मेरे बारे में भी भविष्यवाणी की थी और विज्ञापन दिया था कि यह व्यक्ति तीन वर्ष तक हैज़े से मर जाएगा और मेरी भविष्यवाणी को अपनी सहमति से उसने हज़ारों लोगों में प्रकाशित कर दिया था और विज्ञापन द्वारा स्वयं प्रकट कर दिया था कि यह भविष्यवाणी मेरी सहमति से हुई है। और स्वयं स्पष्ट है कि लेखराम जैसा विरोधी व्यक्ति ऐसी भविष्यवाणी को सुन कर असहमति की अवस्था में नालिश करने से कैसे रुक सकता था। यह घटना सैकड़ों लोगों को मालूम है कि वह इस भविष्यवाणी को प्राप्त करने के लिए लगभग दो माह तक क़ादियान में रहा था। फिर भविष्यवाणी के बाद पांच वर्ष बराबर जीवित रहा और किसी के पास शिकायत न की कि मेरी इच्छा के विरुद्ध यह भविष्यवाणी हुई। अत: भविष्यवाणी की मीआद के अन्दर ही ख़ुदा तआला की इच्छा से इस दुनिया से गुज़र गया। उसने मौत के समय भी मेरे बारे में कोई सन्देह व्यक्त नहीं किया क्योंकि वह दिल से जानता था कि मैं दुष्प्रकृति और षडयंत्र करने वाला नहीं हूं। और जो व्यक्ति रूहुल क़ुदुस से बोलता है क्या वह उस बदमाश से समानता रखता है जो शैतानी तथा आपराधिक छल से कोई अनुचित हरकत करता है? जो

ख़ुदा से बोलता है वह पब्लिक के सामने कभी शर्मिन्दा नहीं हो सकता। यह हज़ारों कृतज्ञता का स्थान है कि मेहरबान और न्यायवान प्रकृति तथा दक्ष सरकार की छाया के नीचे हम जीवन व्यतीत करते हैं। यदि मेरी क़ौम ये मौलवी मुझ पर दांत पीसते हैं और मुझे झूठा और दुष्कर्म करने वाला समझते हैं तो मैं इस उपकारी सरकार को अपने और इन लोगों के फ़ैसले के लिए इस प्रकार से जज बनाता हूं कि कोई भविष्य की ग़ैब बताना जो इन्सान की नेकी या बदी से कुछ भी संबंध न रखे और किसी सदस्य पर उसका प्रभाव न हो अपने ख़ुदा से प्राप्त बताऊं और अपने सच सा झूठ का उसको आधार ठहराऊं और झूठा होने की अवस्था में प्रत्येक दण्ड उठाऊंगा परन्तु इन में **कौन है जो इस फैसले को स्वीकार करे?**

अफ़सोस कि इस मुहम्मद हुसैन को भली भांति मालूम है कि लेखराम ने बहुत आग्रह से यह भविष्यवाणी प्राप्त की और एक लम्बे समय तक क़ादियान में इसी उद्देश्य से मेरे पास रहा था। और डिप्टी अब्दुल्लाह आथम स्वयं सरकारी कानूनों से परिचित थे तो क्योंकर हो सकता था कि ऐसा आदमी जो एक एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट भी रह चुका था मेरे स्वयं भविष्यवाणी करने की स्थिति में खामोश रह सकता। और एक हस्तलिखित लेख उनके मुक़द्दमे डॉक्टर क्लार्क की मिसल में मैंने सम्मिलित भी कराई है। और फिर यह मुबाहले का विज्ञापन जो 21नवम्बर 1898 को प्रकाशित किया गया इसके बावजूद कि जो किसी के अस्तित्त्व से उसको विशेषता नहीं अपितु केवल झूठे के अपमान के लिए प्रकाशित किया गया है। ऐसा आहिस्ता और सावधानीपूर्वक उसे मैंने प्रकाशित किया है कि जब तक मुहम्मद हुसैन के गिरोह की ओर

से निरन्तर विज्ञापन और पत्र मुबाहले की मांग के मेरे पास नहीं पहुंचे उस समय तक मैंने इस विज्ञापन को रोक रखा। मुबाहले की मांग के ये समस्त विज्ञापन मेरे पास मौजूद हूं। अत: इन समस्त घटनाओं का सही नक्शा जो आज तक मुझ में और मुहम्मद हुसैन के गिरोह में प्रकटन में आए यही है जो मैंने वर्णन किया है।

मैं इस पुस्तक के अन्त में अपने दोनों विज्ञापनों अर्थात 21 नवम्बर 1898 ई० का विज्ञापन और 30 नवम्बर 1898 ई० का विज्ञापन अधिकारियों की जानकारी हेतु सम्मिलित करता हूँ।

अंतत: मैं अपनी दक्ष और उपकारी सरकार की सेवा में यह बात प्रस्तुत करना अत्यंत आवश्यक समझता हूं कि मेरी क़ौम के मौलवियों को केलव इस कारण से विरोध है कि मैं उनकी आशाओं और इच्छाओं के विपररीत अपनी जमाअत को शिक्षा देता हूं। जिस प्रकार के महदी और मसीह के वे प्रतीक्षक थे मैं उन आस्थाओं का विरोधी हूं। और ख़ुदा तआला ने मुझ पर यह प्रकट किया है कि ये समस्त बातें निर्मूल और झूठ हैं कि कोई ऐसा महदी और मसीह दुनिया में आएगा कि जो धर्म के फ़ैलाने के लिए ख़ून बहाएगा। ख़ुदा ने हरगिज़ नहीं चाहा कि धर्म को इस प्रकार से फैलाए। यदि हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में विरोधियों से लड़ाइयां हुई थीं तो वे लड़ाइयां धर्म-प्रसार के लिए कदापि न थीं केवल बतौर बचाव के तौर पर थीं अर्थात् केवल इसलिए हुई थीं कि उस समय के विरोधी असभ्यतापूर्ण धार्मिक पक्षपात से मुसलमानों को पृथ्वी से मिटाना चाहते थे। उनको क़त्ल करते थे और बड़े-बड़े कष्ट देते थे और नहीं छोड़ते थे कि इस्लाम के लिए स्वतंत्रतापूर्वक उपदेश दिया जाए। तो इन आपराधिक

गतिविधियों के पश्चात् दण्ड देने के तौर पर वे लोग क़त्ल किए गए जिन्होंने अकारण केवल धार्मिक वैर से मुसलमानों का वध किया था। परन्तु अब धार्मिक वैर और पक्षपात से निर्दोष मुसलमानों का कोई वध नहीं करता और धर्म के लिए उन पर कोई तलवार नहीं चलाता। हां सांसारिक तौर पर सांसारिकों की परस्पर लड़ाइयां होती हैं तो हुआ करें हमें उन से क्या मतलब। फिर जिस हालत में इस्लाम को मिटाने के लिए कोई तलवार नहीं उठाता तो बड़ी मूर्खता और क़ुर्आन का विरोध है कि धर्म के बहाने से तलवार उठाई जाए। यदि कोई ऐसा व्यक्ति ख़ूनी महदी या मसीह के नाम पर दुनिया में आए और लोगों को प्रेरणा दे कि तुम काफ़िरों से लड़ो समझना चाहिए कि वह कज़्ज़ाब और झूठा है और क़ुर्आन की शिक्षानुसार कार्रवाई नहीं करता अपितु विपरीत मार्ग पर चलता है। मैं सच-सच कहता हूं कि ऐसी आस्थाओं वाले क़ुर्आन का अनुकरण नहीं करते अपितु एक मूर्खतापूर्ण रस्म और आदत की मूर्ति की उपासना करते हैं। और यह पादरियों की भी मूर्खता और सर्वथा ग़लती है कि अकारण हमेशा शोर मचाते रहते हैं कि इस्लाम में तलवार से धर्म को बढ़ाना क़ुर्आन का आदेश है और इस प्रकार से मूर्ख जाहिलों को और भी व्यर्थ एवं ग़लत विचारों की ओर रुजू देते और उकसाते हैं। इन लोगों को क़ुर्आन का ज्ञान नहीं है और न ख़ुदा से इल्हाम पाते हैं ताकि ख़ुदा के कलाम के मायने ख़ुदा से मालूम करें। और इस प्रकार अकारण एक घटना के विरुद्ध बात की पुनरावृत्ति कराते रहते हैं। मुझे ख़ुदा ने क़ुर्आन का ज्ञान दिया है और अरबी भाषा के मुहावरों को समझने के लिए वह समझ प्रदान की है कि मैं गर्व के बिना कहता हूं कि इस देश में किसी अन्य को यह समझ प्रदान नहीं

हुई। मैं बलपूर्वक कहता हूं कि क़ुर्आन में ऐसी शिक्षा कदापि नहीं है कि धर्म को तलवार के साथ सहायता दी जाए या आपत्ति करने वालों पर तलवार उठाई जाए। क़ुर्आन बार-बार हमें शिक्षा देता है कि तुम विरोधियों के कष्ट देने पर सब्र करो। इसलिए निस्सन्देह समझना चाहिए कि ऐसा महदी या मसीह इस्लाम में कदापि नहीं आएगा कि जो धर्म के लिए तलवार उठाए। सच्चा धर्म तर्कों के माध्यम से दिलों के अन्दर जाता है न कि तलवार के साथ। अपितु तलवार तो विरोधी को और आरोप का अवसर देती है। ख़ुदा तआला ने यह अत्यन्त कृपा की है कि इन लोगों के ग़लत विचारों के निवारण के लिए मसीह मौऊद का आकाश से उतरना वास्तविकता के विरुद्ध सिद्ध कर दिया है। क्योंकि ख़ुदा की कृपा से मेरी कोशिशों से सिद्ध हो चुका है और अब समस्त मनुष्यों को बड़े-बड़े तर्कों तथा खुली-खुली घटनाओं के कारण मानना पड़ेगा कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ कदापि नहीं गए। अपितु ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार और उन दुआओं के स्वीकार होने के कारण जो पूरी रात हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने अपने प्राण बचाने के लिए की थीं सलीब तथा सलीबी लानत से बचाए गए और हिन्दुस्तान में आए और बौद्ध धर्म के लोगों से बहसें कीं। अन्त में कश्मीर में मृत्यु पाई और मुहल्ला ख़ानयार में आप का पवित्र मज़ार है जो शहज़ादा नबी के मज़ार के नाम से प्रसिद्ध है। फिर जब कि आसमान से आने वाला सिद्ध न हो सका अपितु इसके विपरीत सिद्ध हुआ तो उस महदी का अस्तित्त्व भी झूठ सिद्ध हो गया जिसने ऐसे मसीह के साथ मिलकर रक्तापत करना था। क्योंकि अनुसंधान के नियम एवं तर्कशास्त्र के अनुसार दो अनिवार्य चीज़ों में से एक चीज़ के

ग़लत होने से दूसरी चीज़ का ग़लत होना भी अनिवार्य हुआ। इसलिए मानना पड़ा कि समस्त विचार ग़लत, निराधार तथा व्यर्थ हैं। और चूंकि तौरात की दृष्टि से सलीब पर मरने वाला लानती होता जाता है। और लानत का शब्द इब्रानी और अरबी भाषा में एक समान है, जिसके मायने ये हैं कि मलऊन ख़ुदा से वास्तव में दूर जा पड़े और ख़ुदा उस से विमुख हो जाए और वह ख़ुदा से विमुख हो जाए और ख़ुदा उसका दुश्मन और वह ख़ुदा का दुश्मन हो जाए। तो नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा का ऐसा प्यारा, ऐसा चुना हुआ, ऐसा मुक़द्दस नबी जो मसीह है उसके बारे में ऐसा अनादर कोई सच्चा सम्मान करने वाला कदापि नहीं करेगा और फिर घटनाओं ने इस पहलू को और भी सिद्ध कर दिया कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब पर नहीं मरे। अपितु उस देश से काफ़िरों के हाथ से मुक्ति पाकर गुप्त तौर पर हिन्दुस्तान की ओर चले आए। इसलिए इन मूर्ख मौलवियों के ये सब क़िस्से झूठे हैं और ये सब ख़तरनाक आशाएं निरर्थक हैं तथा इन का परिणाम भी उपद्रवपूर्ण विचारों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। यदि मेरे मुक़ाबले पर इन लोगों की आस्थाओं का अदालत में इक़रार लिया जाए तो ज्ञात हो कि यो लोग कैसी खतरनाक आस्थाओं में लिप्त हैं कि न केवल सच्चाई से दूर अपितु अमन और सलामती के प्रकाश से भी दूर हैं।

मैं अन्त में इस पुस्तक को इस बात पर समाप्त करता हूं कि यद्यपि ईसाई आस्थाओं की दृष्टि से हज़रत मसीह का दोबारा आना राजनीतिक हितों से कुछ संबंध नहीं रखता। परन्तु जिस प्रकार से वर्तमान इस्लामी मौलवियों ने हज़रत ईसा का आकाश से उतरना और महदी के साथ सहमत होकर जिहादी लड़ाई करना अपनी आस्थाओं

में ग़लत तौर पर सम्मिलित कर लिया है। यह आस्था न केवल झूठ है अपितु ख़तरनाक भी है और जो कुछ वर्तमान में हज़रत ईसा के हिन्दुस्तान में आने और कश्मीर में मृत्यु पाने का मुझे सबूत मिला वह इन ख़तरनाक विचारों को बुद्धिमान हृदयों से पूर्णतया मिटा देता है। और मेरा यह अनुसंधान अस्थायी तथा सरसरी नहीं अपितु अत्यन्त पूर्ण है। अत: इस अनुसंधान का प्रारंभ उस मरहम से है जो मरहम-ए-ईसा कहलाता है और 'मरहम-ए-हवारिय्यीन' भी कहते हैं। और तिब्ब की हज़ार पुस्तकों से अधिक में इस का वर्णन है। मजूसी और यहूदी, ईसाई और मुसलमान वैद्यों ने अपनी-अपनी पुस्तकों में इसकी चर्चा की है। चूंकि मैंने अपनी आयु का बहुत सा भाग तिब्ब के सुनने और पढ़ने में व्यतीत किया है और पुस्तकों का एक बड़ा भण्डार भी मुझ को मिला है इसलिए चश्मदीद तौर पर मुझे यह प्रमाण मिला है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला की कृपा से और अपनी दर्द भरी दुआओं की बरकत से सलीब से मुक्ति पा कर और फिर भौतिक सामानों के कारण मरहम-ए-हवारिय्यीन को प्रयोग करके तथा सलीबी ज़ख़्मों से ठीक हो कर हिन्दुस्तान की ओर आए थे। सलीब पर कदापि नहीं मरे। कुछ बेहोशी की हालत हो गई थी जिस से ख़ुदा की हिकमत से तीन दिन ऐसी क़ब्र में भी रहे जो घर के अन्दर थी। और चूंकि यूनुस के समान जीवित थे अन्तत: इस से बाहर आ गए।★

★**नोट -** यह बात निश्चित है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सिलाम की मृत्यु पर नहीं हुई। और उन्होंने स्वयं यूनुस नबी के मछली के क़िस्से की अपने क़िस्से से जो तीन दिन क़ब्र में रहना था समानता देकर प्रत्येक बुद्धिमान को यह समझा दिया है कि वह यूनुस नबी की तरह क़ब्र में ज़िन्दा होने की हालत में दाखिल किए गए थे और जब तक क़ब्र में रहे जीवित रहे, अन्यथा मुर्दों को ज़िन्दा से क्या

और फिर दूसरा परिणाम इस अनुसन्धान का विभिन्न क़ौमों की वे ऐतिहासिक पुस्तकें हैं जिन से सिद्ध होता है कि अवश्य हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हिन्दुस्तान और तिब्बत और कश्मीर में आए थे। और निकट ही एक रूसी अँगरेज़ ने जो बौद्ध धर्म की पुस्तकों के हवाले से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इस देश में आना सिद्ध किया है वह पुस्तक मैंने देखी है और मेरे पास है। वह पुस्तक भी इस राय की सहायक है।

शेष नोट - समानता हो सकती है और अवश्य है कि नबी का उदाहरण व्यर्थ और निरर्थक न हो। इंजील में एक अन्य स्थान पर भी इस बात की ओर इशारा है जहां लिखा है कि ज़िन्दा को मुर्दों में क्यो ढूंढते हो। कुछ हवारियों का यह विचार कि हज़रत ईसा सलीब पर मृत्यु पा गए थे कदापि सही नहीं है। क्योंकि आप का क़ब्र से निकलना और हवारियों को अपने ज़ख़्म दिखलाना और यूनुस नबी से अपनी समानता बताना ये सब बातें इस विचार को रद्द करती हैं तथा इस के विपरीत हैं।

फिर हवारियों में इस स्थान में मतभेद है। अतः बरनवास की इंजील में जिसको मैंने अपनी आंखों से देखा है हज़रत ईसा की सलीब पर मृत्यु होने से इन्कार किया गया है। और इंजील से स्पष्ट है कि बरनबास भी एक बुज़ुर्ग हवारी था और आप का आकाश पर जाना एक रूहानी बात है। आकाश पर वही चीज़ जाती है जो आकाश से आती है और जो पृथ्वी का है वह पृथ्वी में जाता है। तौरात और क़ुर्आन ने भी यही गवाही दी है। और जबकि यहूदी सलीबी कार्रवाई के कारण हज़रत मसीह के रूहानी रफ़ा से इन्कारी थे। इसलिए उनको जताया गया कि हज़रत मसीह आकाश पर गए अर्थात् ख़ुदा ने मुक्ति देकर लानत से जो सलीब का परिणाम था उनको बरी कर लिया। और उन कुछ हवारियों की गवाही स्वीकार करने योग्य कैसे हो सकती है जो सलीब की घटना के समय उपस्थित न रहे और जिन के पास चश्मदीद गवाही नहीं है। इसी से।

और फिर सबसे अंत में शहज़ादा नबी की क़ब्र जो श्रीनगर मोहल्ला ख़ानयार में है जिस को लोग शहज़ादा यूज़ आसफ़ नबी की क़ब्र तथा कुछ ईसा साहिब नबी की क़ब्र कहते हैं इस आशय की समर्थक है। और इस क़ब्र में एक खिड़की भी है जो दुनिया की समस्त क़ब्रों के विपरीत अब तक मौजूद है। कश्मीर के कुछ लोगों का विचार है कि इस क़ब्र के साथ कोई ख़ज़ाना भी दफ़्न है इसलिए खिड़की है। मैं कहता हूं कि शायद कुछ जवाहिरात हों। परन्तु मेरी समझ में यह खिड़की इसलिए रखी है कि कोई अज़ीमुश्शान कत्बः (शिला लेख) इस क़ब्र के अन्दर है। यह उसी प्रकार की घटना प्रतीत होती है जैसा कि उन्हीं दिनों में ज़िला पीराकोई में जो उत्तर पश्चिम देशों के ज़िला सरहद नेपाल में एक गांव है एक टीले के अन्दर से एक भारी सन्दूक निकला है जिसमें जवाहिरात, आभूषण तथा कुछ हड्डी और राख थी और सन्दूक पर यह खुदा हुआ था कि गौतम बुद्ध साकी मुनि के फूले हैं और नबी का शब्द जो इस क़बीले के बारे में कश्मीर के हज़ारों लोगों की जीभ पर जारी है यह भी हमारे दावे के लिए एक प्रमाण है।★ क्योंकि नबी का शब्द इब्रानी और अरबी दोनों भाषाओं में समान है। दूसरी किसी भाषा में यह शब्द नहीं आया और इस्लाम की आस्था है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कभी नबी नहीं आएगा इसलिए निर्धारित हुआ कि यह इब्रानी नबियों में से एक नबी है। और फिर

★ एक और प्रमाण हमारे इस दावे पर यह है कि यूज़ आसफ की जीवनी और (शिक्षा) के संबंध में अब तक जितनी पुस्तकें हमें मिली हैं जिसकी क़ब्र श्रीनगर में है वह समस्त शिक्षा इंजील की नैतिक शिक्षा से नितान्त समानता रखती है अपितु कुछ वाक्य तो बिल्कुल इंजील के वाक्य हैं। इसी से

शहज़ादा के शब्द पर विचार करके हम असल वास्तविकता से और भी निकट आ जाते हैं। फिर कश्मीर के समस्त रहने वालों की इस बात पर सहमति देखकर कि यह नबी जिस की कश्मीर में क़ब्र है हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से छः सौ वर्ष पहले गुज़रा है। स्पष्ट तौर पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को निर्धारित कर रहा है तथा सफाई से यह फैसला हो जाता है कि यही वह पवितर और मासूम नबी और ख़ुदा तआला के प्रताप के तख़्त से अनश्वर शहज़ादा है जिस को अयोग्य और अभागे यहूदियों ने सलीब द्वारा मारना चाहा था।

अतः यह ऐसा सबूत है कि यदि इसके समस्त तर्कों को इकट्ठी नज़र से देखा जाए तो हमारी क़ौम के ग़लती करने वाले मौलवियों के विचार इस से टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं तथा अमन और मैत्री की मुबारक इमारत अपनी चमक दिखलाती है। जिस से आवश्यक तौर पर यह परिणाम निकलता है कि न कोई आकाश पर गया और न वह लड़ने के लिए महदी के साथ सम्मिलित होकर क़यामत का शोर डालेगा अपितु वह कश्मीर में अपने ख़ुदा के दया के आंचल में सो गया।

हे आदरणीय पाठको! अब मैंने जो कुछ मेरे सिद्धान्त, निर्देश और शिक्षा थी सब उच्चतम सरकार की सेवा में व्यक्त कर दी। मेरे निर्देशों का सारांश यही है कि मैत्री और ग़रीबी से जीवन व्यतीत करो और जिस सरकार के हम अधीन हैं। अर्थात् बर्तानवी सरकार उसके शुभ चिन्तक और आज्ञाकारी हो जाओ न कपट और दुनियादारी से। अन्त में दुआ पर समाप्त करता हूं कि ख़ुदा तआला हमारी महामहिम

महारानी क़ैसरा हिन्द दामा इक्बालुहा का सौभाग्य दिन-प्रतिदिन बढ़ाए और हमें सामर्थ्य दे कि हम सच्चे दिल से उसके आज्ञाकारी और शांति प्रिय इन्सान हों। आमीन।

लेखक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान से

27 दिसम्बर 1898 ई०

परिशिष्ट कश्फ़ुलग़िता

सरकार के ध्यान योग्य

मुझे इस पुस्तक के लिखने के बाद मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब इशाअतुस्सुन्नः की अंग्रेज़ी में एक पत्रिका मिली जिस को उसने विक्टोरिया प्रेस लाहौर में छाप कर 14 अक्टूबर 1898 ई० में प्रकाशित किया है। इस पत्रिका के देखने से मुझे बहुत अफ़सोस हुआ, क्योंकि उसने इसमें मेरे संबंध में तथा अपनी आस्था महदी के बारे में अत्यन्त लज्जाजनक झूठ से काम लिया है और सर्वथा इफ़्तिरा से प्रयास किया है कि मुझे महामान्य सरकार की दृष्टि में बाग़ी (विद्रोही) ठहराए। किन्तु इस सही और सच्ची कहावत की दृष्टि से कोई बात छुपी हुई नहीं जो अन्त में प्रकट न हो। मैं विश्वास रखता हूँ कि हमारी दक्ष और तीक्ष्ण बुद्धि सरकार शीघ्र मालूम कर लेगी कि मूल वास्तविकता क्या है।

प्रथम बात जो मुहम्मद हुसैन ने वास्तविकता के विरुद्ध अपनी इस पत्रिका में मेरे बारे में सरकार में प्रस्तुत की है यह है कि वह महामान्य सरकार को सूचना देता है कि यह व्यक्ति महामान्य सरकार के लिए ख़तरनाक है अर्थात् विद्रोह के विचार दिल में रखता है। परन्तु मैं ज़ोर से कहता हूँ कि यदि मैं ऐसा ही हूँ तो इस कृतघ्नता और विद्रोह के जीवन से अपने लिए मृत्यु को प्राथमिकता देता हूँ। मैं विनयपूर्वक ध्यान दिलाता हूँ कि महामान्य सरकार मेरे और मेरी

शिक्षा के बारे में जहां तक संभव हो पूर्ण जांच पड़ताल करे और मेरी जमाअत के उन प्रतिष्ठित पदाधिकारियों तथा देशी अफ़सरों, रईसों और अन्य प्रतिष्ठित शिक्षा प्राप्त लोगों से जिनकी संख्या कई सौ तक है क़सम लेकर पूछें कि मैंने इस उपकारी सरकार के बारे में उनको क्या निर्देष दिये हैं तथा किस-किस ताक़ीद से इस सरकार के आज्ञापालन के लिए वसीयतें की हैं और सरकार इस मौलवी अर्थात् मुहम्मद हुसैन की उस गवाही को ध्यानपूर्वक देखें जो उसने अपनी पत्रिका इशाअतुस्सुन्न: में जिस की चर्चा इस पुस्तक में हो चुकी है। मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया के रीव्यू के अवसर पर मेरे विचारों और मेरे पिता साहिब मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा के विचारों के संबंध में जो अंग्रेज़ी सरकार के बारे में हैं अपने हाथ से लिखा है। और मेरे इन लेखों को जो निरन्तर उन्नीस वर्ष से महामान्य सरकार के समर्थन में प्रकाशित हो रहे हैं ध्यानपूर्वक देखें और प्रत्येक पहलू से मेरे बारे में जांच-पड़ताल करे। फिर यदि मेरी परिस्थितियां सरकार की दृष्टि में संदिग्ध हों तो मैं दिल से चाहता हूँ कि सरकार कठोर से कठोर दण्ड मुझे दे दे। किन्तु यदि मेरी असल परिस्थितियों के विपरीत ये समस्त रिपोर्ट सरकार में कथित मुहम्मद हुसैन ने पहुंचाई हैं तो मैं एक वफ़ादार, शुभ चिन्तक और प्राण न्योछावर करने वाली प्रजा होने के कारण महामान्य सरकार में पूर्ण आदरपूर्वक न्याय याचक (फ़र्यादी) हूँ कि मुहम्मद हुसैन से मांग हो कि उसने क्यों उन सही घटनाओं के विरुद्ध सरकार को सूचना दी जिन को वह अपने रीव्यू बराहीन अहमदिया में स्वीकार कर चुका है। यहां तक कि उसने बारह वर्ष तक निरन्तर उस पहली राय के विरुद्ध कोई राय व्यक्त न की और अब

शत्रुता के दिनों में मुझे बाग़ी ठहराता है। हालांकि मैंने इस उपकारी सरकार की हमदर्दी में उन्नीस वर्ष तक अपनी क़लम से वह कार्य लिया है और इस ढंग से सुदूर देशों तक सरकार की न्यायप्रियता की प्रशंसाओं को पहुंचाया है। कि मैं दावे से कहता हूँ कि इस कार्यवाही का उदाहरण दूसरे कारनामों में कदापि नहीं मिलगा। मेरे पास वे शब्द नहीं जिनसे मैं अपना सविनय निवेदन सरकार पर व्यक्त करूँ कि मुझे इस व्यक्ति कि उन घटना के विरुद्ध बातों से कितना अघात पहुंचता है और कैसे दर्द पहुंचाने वाले ज़ख़्म लगे हैं। अफ़सोस कि इस व्यक्ति ने जानबूझ कर सरकार की सेवा में मेरे बारे में अत्यन्त अन्यायपूर्ण झूठ बोला है और मेरी सम्पूर्ण सेवाओं को बर्बाद करना चाहा है। इस दावे के मेरे पास पुख़्ता कारण, पूर्ण गवाहियां और गवाह मौजूद हैं। मैं आशा रखता हूँ कि इस कारण से कि मैं एक वफ़ादार ख़ानदान में से हूँ जिन्होंने अपने माल और प्राणों से सरकार पर अपनी फ़र्माबरदारी सिद्ध की है मेरी इस दर्दनाक फ़र्याद को यह उपकारी सरकार विचार करके ध्यान देगी और झूठ बोलने वाले को चेतावनी देगी।

दूसरी बात जो इसी पत्रिका में मुहम्मद हुसैन ने लिखी वह यह है कि जैसे मैंने कोई इल्हाम इस विषय का प्रकाशित किया है कि महामान्य सरकार की हुकूमत आठ वर्ष के अन्दर तबाह हो जाएगी। मैं इस इल्ज़ाम का उत्तर इसके अतिरिक्त क्या लिखूं कि ख़ुदा झूठे को तबाह करे। मैंने ऐसा इल्हाम कदापि प्रकाशित नहीं किया। मेरी समस्त पुस्तकें सरकार के सामने मौजूद है मैं सादर निवेदन करता हूँ कि सरकार इस व्यक्ति से मांग करे कि **किस पुस्तक,** पत्र या विज्ञापन में मैंने ऐसा इल्हाम **प्रकाशित किया है?** और मैं आशा

रखता हूँ कि महामान्य सरकार उसके इस छल से ख़बरदार रहेगी कि यह व्यक्ति अपने इस झूठे बयान के समर्थन के लिए यह उपाय न करे कि अपनी जमाअत और अपने गिरोह में से ही जो मुझ से धार्मिक मतभेद के कारण हार्दिक वैर रखते हैं। झूठे बयान बतौर गवाही सरकार तक पहुंचाए। इस मनुष्य और उसके सहपंथी लोगों का मेरे साथ कुछ आना-जाना और मुलाक़ात नहीं कि मैंने उनको कुछ मौखिक कहा हो। मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ अपनी पुस्तकों में और विज्ञापनों में प्रकाशित करता हूँ। और मेरे विचार तथा मेरे इल्हाम मालूम करने के लिए मेरी पुस्तकें और विज्ञापन अभिभावक हैं। और मेरी जमाअत के प्रतिष्ठित गवाह हैं। अत: मैं सविनय निवेदन करता हूँ कि हमारी महामान्य सरकार इस घटना के विरुद्ध जासूसी करने की इस मनुष्य से मांग करे। कप्तान डगलस साहिब भूतपूर्व डिप्टी कमिश्नर ज़िला गुरदासपुर डॉक्टर क्लार्क के मुक़द्दमे में जो मुझ पर दायर हुआ था लिख चुके हैं कि यह मनुष्य मुझ से शत्रुता रखता है। इसलिए झूठ बोलने से कुछ भी बचाव नहीं करता।

तीसरी बात जो इसी पत्रिका में मुहम्मद हुसैन ने लिखी है यह कि यह व्यक्ति मसीह मौऊद होने का झूठा दावा करता है। इसके उत्तर में इतना लिखना पर्याप्त है कि जिस प्रकार नबियों की नुबुव्वत सिद्ध होती रही है। इसी प्रकार मेरे इस दावे को मेरे ख़ुदा ने सिद्ध किया है। और ख़ुदा तआला के आकाशीय निशानों ने मेरी गवाही दी है। अब रही यह बात कि मुहम्मद हुसैन और उसके दूसरे सहपंथी मौलवी मुझे झूठा क्यों कहते हैं और क्यों इतनी शत्रुता करते हैं? तो अभी मैं इस पुस्तक में लिख चुका हूँ कि यह शत्रुता इस

कारण से है कि मेरी शिक्षा उनके उद्देश्यों के विरुद्ध है। अर्थात् इस आस्था के विरुद्ध कि मसीह मौऊद आकाश से उतरेगा और महदी के साथ सम्मिलित होकर ईसाइयों से लड़ाइयाँ करेगा।★ और महदी का अस्तित्व इन लोगों की दृष्टि में इसलिए आवश्यक है कि मसीह मौऊद ख़लीफ़ा नहीं हो सकता क्योंकि वह क़ुरैश में से नहीं है। जैसा कि मुहम्मद हुसैन ने स्वयं अपनी पत्रिका जिल्द-12 पृष्ठ-380 रोम के बादशाह की ख़िलाफ़त के उत्सव में इस बात को अपनी आस्था व्यक्त की है। फिर इस लोगों ने इसी तर्क से मसीह के दोबारा आगमन के समय क़ुरैशी महदी की आवश्यकता ठहराई है। और फिर बहुत सी लड़ाइयों का वर्णन किया है। और मैं जानता हूँ कि ये आस्थाएं अत्यन्त ख़तरनाक हैं क्योंकि इस आस्था का मनुष्य हमेशा अपने दिल में शान्ति के विरुद्ध योजनाएं रखता है। परन्तु मैं इन आस्थाओं के विरुद्ध हूँ। मैं ऐसे किसी मसीह और महदी को नहीं मानता जो

★ **नोट-** मौलवी मुहम्मद हुसैन ने जो वर्तमान में एक अंग्रेज़ी पत्रिका सरकार को दिखाने के लिए अक्टूबर 1898 ई० में प्रकाशित की थी ताकि उसको अंग्रेज़ी सरकार कुछ भूमि दे दे। उसमें उसने अपनी आस्था के विरुद्ध लिखा है कि वह महदी मौऊद के आने का क़ाइल नहीं है। हालांकि इसी इन्कार के कारण उसने मुझे नास्तिक और दज्जाल ठहराया है। फिर उसने सरकार के सामने यह अत्यन्त शर्मनाक झूठ बोला है। अपने सहपंथी मौलवियों को हमेशा यह पाठ देता है कि महदी मौऊद आएगा और ईसाइयों के साथ लड़ाइयां करेगा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उसकी सहायता के लिए आकाश से उतरेंगे और सरकार के आगे इस बयान के विरुद्ध बयान करता है। मैं सविनय निवेदन करता हूँ कि महामान्य सरकार मौलवियों के समक्ष इस बारे में इसका इज़हार ले ताकि वह वास्तविकता खुल जाए जिसको सदैव छुपाता है। इसी से

काफ़िरों से लड़ाइयाँ करेगा और उनके माल मौलवियों तथा उनके गिरोह को दे देगा। फिर मैं उनकी दृष्टि में इसलिए झूठा हूँ कि मेरी आस्था से उनकी समस्त आशाएं ख़ाक में मिल गईं। और मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरी इस शिक्षा से उनके काल्पनिक लाभ की बड़ी ही हानि हुई है। परन्तु यह मेरा दोष नहीं है। उनकी स्वयं ग़लत बातों और बद गुमानियों का दोष है। **और मुहम्मद हुसैन का उस पत्रिका में यह लिखना कि मैं** उस महदी को नहीं मानता जिसकी उसके समस्त सहपंथी मौलवी प्रतीक्षा कर रहे हैं और जिस के समर्थन के लिए उनके विचारानुसार मसीह आकाश से उतरेगा। यह सर्वथा कपटपूर्ण लेख है जो उसके दिल में नहीं है। और सैकड़ों मौलवी पंजाब और हिन्दुस्तान के गवाही दे सकते हैं कि वह ऐसे ख़ूनी महदी को मानता है परन्तु कपटाचार के तौर पर सरकार के पास इस आस्था के विरुद्ध वर्णन करता है। यदि इसके सहपंथी मौलवियों से जैसे मौलवी अहमदुल्लाह अमृतसरी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मौलवी अब्दुल जब्बाह अमृतसरी, मौलवी मुहम्मद बशीर भोपाली, मौलवी अब्दुल हक़ देहलवी, मौलवी इब्राहीम आरा, मौलवी अब्दुल अज़ीज़ लुधियानवी और विशेष तौर पर मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी उस्ताद मुहम्मद हुसैन से क़सम लेकर पूछा जाए कि तुम लोग महदी मौऊद के बारे में क्या आस्था रखते हों। वह लड़ाइयों के लिए आने वाला है या नही? और यह कि मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्नः तुम में से है और तुम्हारी आस्था पर हैं या वह पृथक है। और क्या वह इस समय की ख़िलाफ़त को क़ुरैश के अतिरिक्त किसी और के लिए प्रस्तावित करता है। तो इन गवाहियों से मुहम्मद हुसैन की यह

सम्पूर्ण कपटपूर्ण कार्यवाही सरकार पर ऐसी प्रकट हो जाएगी, जैसा कि एक सफ़ेद की हुई और सुन्दर बनाई हुई क़ब्र में से खोदने के समय अन्दर की हड्डियां और गन्दगियां प्रकट हो जाती हैं।

मैं अपनी दक्ष और तीक्ष्ण बुद्धि वाली सरकार को विश्वास दिलाता हूँ कि यह मनुष्य महदी के बारे में वही आस्था रखता है जो उसके सहपंथी दोस्त अर्थात् दूसरे मौलवी पंजाब और हिन्दुस्तान के आस्था रखते हैं। सरकार समझ सकती है कि यह क्योंकर संभव है कि मुहम्मद हुसैन इतनी बड़ी सामूहिक आस्था में दूसरे मौलवियों से मतभेद रखकर फिर उनका दोस्त और मुखिया रह सके। और इस पर एक और तर्क भी है कि यह मनुष्य अपने इशाअतुस्सुन्नः जिल्द-12 पृष्ठ-380 में साफ लिख चुका है कि "ख़िलाफ़त केवल क़ुरैश के लिए मान्य है दूसरी क़ौम का कोई व्यक्ति ख़लीफ़ा नहीं हो सकता।" अब सोचना चाहिए कि यह क्योंकर प्रस्तावित कर सकता है कि हज़रत मसीह दोबारा आएंगे तो वह बादशाह होंगे क्योंकि वह तो क़ुरैश में से नहीं है अपितु बनी इस्राईल में से है तो फिर ख़लीफ़ा के अस्तित्व के बिना लड़ाइयां क्योंकर होंगी। इसलिए इन समस्त मौलवियों को स्वीकार करना पड़ा है कि मसीह के पुनर्आगमन के समय क़ुरैश में से एक ख़लीफ़ा होना आवश्यक है जो समय का बादशाह हो। इसी कारण से महदी मा'हूद के इन्कार करने से इन लोगों की समस्त आस्थाएं अस्त-व्यस्त हो जाती हैं। और फिर मसीह का आकाश से उतरना भी व्यर्थ हो जाता है। क्योंकि पृथ्वी पर कोई सच्चा ख़लीफ़ा नहीं जिसके साथ सवार होकर मसीह अलैहिस्सलाम काफ़िरों से लड़ें। इसी कारण मुहम्मद हुसैन हार्दिक तौर पर विश्वास

रखता है कि मसीह के उतरने के समय अवश्य क़ुरैश में से महदी मौऊद आएगा जो समय का ख़लीफ़ा होगा और मसीह मौऊद उसकी बैअत करने वालों के साथ मिल कर सेवा का हक़ अदा करेगा। इसी कारण से सही बुख़ारी की यह हदीस कि اماكم منكم। इन लोगों के नज़दीक इमाम शब्द के क्रम से तथा शब्द منكم के क्रम से महदी मौऊद की ओर संकेत करती है परन्तु हमारे नज़दीक यहां इमाम से अभिप्राय मसीह है जो रूहानी इमामत रखता है और यह हमारी राय मुहम्मद हुसैन और उसके समस्त सहपंथी मौलवियों के विरुद्ध है जो पंजाब और हिन्दुस्तान में रहते हैं। क्योंकि ये लोग इमाम के शब्द से जो हदीस में है महदी मा'हूद अभिप्राय लेते हैं जो क़ुरैश में से होगा और लड़ाइयां करेगा और मसीह मौऊद उसका सलाहकार और मुशीर होकर आएगा परन्तु समय का ख़लीफ़ा महदी होगा। इसलिए ये लोग हदीस अलअइम्मा मिन क़ुरैश (الائمة من قريش) की दृष्टि से जिस के ग़लत मायने इनके दिलों में जमे हुए हैं यही आस्था रखते हैं कि अन्तत: ख़िलाफ़त क़ुरैश में आ जाएगी और उस ख़लीफ़ा का नाम मुहम्मद महदी होगा जो बनी फ़ातिमा में से होगा और धर्म के लिए बहुत ख़ून बहाएगा।

यदि मुहम्मद हुसैन को इतना ही पूछा जाए कि तुम्हारी आस्था के अनुसार जब मसीह आकाश से उतरेगा तो तुम्हारे कथनानुसार मसीह ख़लीफ़ा तो नहीं हो सकता, क्योंकि क़ुरैश में से नहीं तो फिर कौन ख़लीफ़ा होगा जो काफ़िरों से जिहाद करेगा? और बुख़ारी की हदीस اماكم منكم। से कौन इमाम अभिप्राय है तो ये लोग कदापि नहीं कहेंगे कि इमाम से अभिप्राय मसीह मौऊद है अपितु यही कहेंगे

कि महदी अभिप्राय है। अर्थात् वह मनुष्य जो क़ुरैश में से होगा। तो इस प्रश्न से इन लोगों की सब क़लई खुल जाती है। विचार करना चाहिए कि जिस हालत में मुहम्मद हुसैन لامهدی اِلَّاعیسیٰ की हदीस को सही नहीं समझता। और बुख़ारी की हदीस امامکم منکم के यह मायने करता है कि इस इमाम से अभिप्राय मसीह मौऊद नहीं अपितु वह व्यक्ति है जो क़ुरैश में से समय का ख़लीफ़ा होगा। तो क्या इस वर्णन से स्पष्ट तौर पर नहीं खुलता कि महदी को मानता है और उसका प्रतीक्षक है? तो इस स्थिति में इस मनुष्य का कितना लज्जाजनक झूठ है कि **अंग्रेज़ी सरकार को कुछ सुनाता है और अपने घर में आस्था कुछ रखता है।**

यदि उच्च अधिकारी इस बारे में मुझ से इस मनुष्य का वार्तालाप करा दें और वार्तालाप के समय इसके सहपंथी दूसरे मौलवी भी पास खड़े कराए जाएं तो तुरन्त खुल जाएगा कि अब तक यह व्यक्ति अपनी हार्दिक आस्था के विरुद्ध सरकार को धोखा देता रहा है।

मेरे पास इस के ऐसे लेख मौजूद हैं जिन के कारण इस प्रश्न के समय उसका वह अपमान होगा जो विज्ञापन 21 नवम्बर 1898 ई० में झूठे के लिए ख़ुदा तआला से याचना की गई है।

किसी मनुष्य के लिए यह उचित नहीं है कि सरकार के समक्ष **इतना झूठ** बोले यदि यह मनुष्य क़ुरैशी ख़लीफ़ा के आने से इन्कारी होता जिसको सामान्य शब्दों में महदी कहते हैं और मेरी तरह ऐसे मसीह को मानना कि जो न लड़ेगा और न रक्तपात करेगा तो नि:सन्देह मेरी तरह उसके लिए भी कुफ्र का फ़त्वा लिखा जाता।

मैं सरकार को विश्वास दिलाता हूँ कि इस मामले में इस

मनुष्य के खाने के दांत और तथा दिखाने के और हैं। अपने **सहपंथी** मौलवियों पर उनके विचार के अनुसार अपनी आस्था व्यक्त करता है और फिर अब सरकार के दिखाने के लिए लिखता है तो वहां सरकार को प्रसन्न करने के लिए यह आस्था वर्णन कर देता है कि "**मैं नहीं मानता** कि कोई महदी आएगा और लड़ाइयां करेगा।" परन्तु यदि यह महदी को नहीं मानता तो दूसरे मौलवियों का जो मानते हैं क्योंकर मुखिया और एडवोकेट कहलाता है? इन बातों का इन्साफ़ महामान्य सरकार के हाथ में है। मेरे नज़दीक सरकार हम दोनों की वास्तविकता तक इस स्थिति में आसानी के साथ पहुंचेगी कि हम दोनों के अपने समक्ष और दूसरे मौलवियों के समक्ष इस मुक़द्दमे में इक़रार ले। उस समय जो कपटाचारी पद्धति का आदमी होगा उसकी सम्पूर्ण वास्तविकता खुल जाएगी। इसलिए

सविनय निवेदन है

कि यह निर्णय अवश्य किया जाए जबकि यह खुला झूठ उसने ग्रहण किया है तो क्योंकर सन्तुष्टि हो कि **जो दूसरी बातें सरकार तक पहुंचाता है उन में सच बोलता है। इसी से**

समाप्तम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली

मेरी वह भविष्यवाणी जो इल्हाम 21 नवम्बर 1898 ई० में झूठे पक्ष के बारे में थी अर्थात् उस इल्हाम में जिसकी अरबी इबारत यह है جزاء سيئة بمثلها वह मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी पर

पूरी हो गई

मेरा निवेदन है कि महामान्य सरकार इस विज्ञापन को ध्यानपूर्वक देखे

दर्ज शीर्षक का विवरण यह है कि हम दो पक्ष हैं। एक ओर तो मैं और मेरी जमाअत और दूसरी ओर मौलवी मुहम्मद हुसैन और उसकी जमाअत के लोग अर्थात् मुहम्मद बख़्श ज़ाफ़र ज़टली तथा अबुलहसन तिब्बती इत्यादि..... मुहम्मद हुसैन ने धार्मिक मतभेद के कारण मुझे दज्जाल, कज़्ज़ाब, नास्तिक और काफ़िर ठहराया था। और अपनी जमाअत के समस्त मौलवियों को इसमें सम्मिलित कर लिया था तथा इसी आधार पर वे लोग मेरे बारे में बुरा भला कहते थे और गन्दी गालियां देते थे। अन्त में मैंने तंग आकर इसी कारण से मुबाहले का विज्ञापन 21 नवम्बर 1898 ई० को जारी किया जिसकी इल्हामी इबारत جزاء سيئة بمثلها में एक यह भविष्यवाणी थी कि इन दोनों पक्षों में से जो पक्ष अन्याय और अत्याचार करने वाला है उसे उसी प्रकार का अपमान पहुंचेगा जिस प्रकार का अपमान अत्याचार पीड़ित पक्ष का किया गया। अत: आज वह भविष्यवाणी पूरी हो गई। क्योंकि मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अपने लेखों के द्वारा मेरा यह अपमान किया था कि मुझे मुसलमानों की इज्माई

आस्था का विरोधी बता कर नास्तिक, काफ़िर और दज्जाल ठहरा दिया तथा मुसलमानों को अपने इस प्रकार के लेखों से मेरे बारे में बहुत उकसाया कि इसको मुसलमान और अहले सुन्नत मत समझो। क्योंकि इस की आस्थाएं तुम्हारी आस्थाओं की विरोधी हैं। अब इस व्यक्ति की **पत्रिका 14 अक्टूबर** 1898 ई० के पढ़ने से जिस को मुहम्मद हुसैन ने अंग्रेज़ी में इस उद्देश्य से प्रकाशित किया है ताकि सरकार से भूमि लेने के लिए उसका एक माध्यम बनाए। मुसलमानों और मौलवियों को ज्ञात हो गया है कि यह व्यक्ति स्वयं उनके इज्माई (सर्वसम्मत) आस्था का विरोधी है। क्योंकि वह इस पत्रिका में महदी मौऊद के आने से बिल्कुल इन्कारी है जिस की समस्त मुसलमानों को प्रतीक्षा है जो उन के विचारानुसार हज़रत फ़ातिमा[रज़ि.] की सन्तान में से पैदा होगा और मुसलमानों का ख़लीफ़ा होगा तथा उनके धर्म का पेशवा और दूसरे फ़िर्क़ों के मुक़ाबले पर धार्मिक लड़ाइयां करेगा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उसकी सहायता एवं समर्थन के लिए आकाश से उतरेंगे और इन दोनों का एक ही उद्देश्य होगा और वह यह कि तलवार से धर्म का प्रसार करेंगे। और अब मौलवी मुहम्मद हुसैन ने ऐसे महदी के आने से साफ़ इन्कार कर दिया है और इस इन्कार से न केवल वह महदी के अस्तित्व का इन्कारी हुआ अपितु ऐसे मसीह से भी इन्कार करना पड़ा जो उस महदी के समर्थन के लिए आकाश से उतरेगा और दोनों परस्पर मिलकर इस्लाम के विरोधियों से लड़ाइयां करेंगे और यह वही आस्था है जिसके कारण मुहम्मद हुसैन ने मुझे दज्जाल तथा नास्तिक ठहराया था। और अब तक मुसलमानों को यही धोखा दे रहा है कि वह इस आस्था में उनसे सहमति रखता

है। और **अब यह पर्दा खुल गया** कि वह वास्तव में मेरी आस्था से सहमति रखता है। अर्थात् ऐसे महदी और ऐसे मसीह के अस्तित्व से इन्कारी है। इसलिए मुसलमानों की दृष्टि में तथा उनके समस्त उलेमा की दृष्टि में नास्तिक और दज्जाल हो गया। अत: आज भविष्यवाणी جزاء سيئة بمثلها उस पर पूरी हो गई। क्योंकि इसके यही मायने हैं कि ज़ालिम पक्ष को उसी बुराई के समान दण्ड होगा जो उसने कृत्य से पीड़ित पक्ष को पहुंचाई।

रही बात कि उसने मुझे अंग्रेज़ी सरकार का बाग़ी ठहराया, तो ख़ुदा तआला की कृपा से आशा रखता हूँ कि शीघ्र ही सरकार पर भी यह बात खुल जाएगी कि हम दोनों में से किस की बाग़ियों वाली कार्यवाहियां हैं। अभी रोम के बादशाह के वर्णन में उसने मुझ पर आक्रमण करके अपनी पत्रिका इशाअतुस्सुन्न: नं. 3, जिल्द-18, पृष्ठ 98, 99, 100 में एक ख़तरनाक बाग़ियों वाला निबंध लिखा है जिस का सारांश यह है कि "रोम के बादशाह को सच्चा ख़लीफ़ा समझना चाहिए और उसको धार्मिक पेशवा स्वीकार कर लेना चाहिए। और इस निबंध में मुझे काफ़िर ठहराने के लिए यह एक कारण प्रस्तुत करता है कि यह व्यक्ति रोम के बादशाह के ख़लीफ़ा होने का क़ाइल नहीं।" अत: यद्यपि यह सही है कि मैं रोम के बादशाह को इस्लामी शर्तों की पद्धति से ख़लीफ़ा नहीं मानता क्योंकि वह क़ुरैश में से नहीं है और ऐसे ख़लीफ़ाओं का क़ुरैश में से होना आवश्यक है। परन्तु मेरा यह कथन इस्लामी शिक्षा का विरोधी नहीं अपितु हदीस الائمة من قريش से सर्वथा अनुकूल है। परन्तु अफ़सोस कि मुहम्मद हुसैन ने बाग़ियों वाली शैली में वर्णन करके

फिर इस्लाम की शिक्षा को भी त्याग दिया। हालांकि पहले स्वयं भी यही कहता था कि रोम का बादशाह मुसलमानों का ख़लीफ़ा नहीं है और न हमारा धार्मिक पेशवा है। और अब मेरी शत्रुता से रोम का बादशाह उसका ख़लीफ़ा और धार्मिक पेशवा बन गया और उसने इस जोश में अंग्रेज़ी हुकूमत का भी कुछ पास नहीं किया और जो कुछ दिल में गुप्त था वह प्रकट कर दिया और रोम के बादशाह की ख़िलाफ़त के इन्कारी को काफ़िर ठहराया और यह समस्त जोश उसको इसलिए पैदा हुआ कि मैंने अंग्रेज़ी हुकूमत की प्रशंसा की और यह कहा कि यह सरकार न केवल मुसलमानों की दुनिया के लिए अपितु उनके धर्म के लिए भी सहायक है। अब वह विद्रोह फैलाने के लिए इस बात से इन्कार करता है कि अंग्रेज़ों के द्वारा कोई धार्मिक सहायता हमें पहुंची है और इस बात पर बल देता है कि धर्म का सहायक केवल रोम का बादशाह है। परन्तु यह सर्वथा बेईमानी है। यदि यह सरकार हमारे धर्म की संरक्षक नहीं तो फिर क्योंकर दुष्टों के आक्रमणों से हम सुरक्षित हैं। क्या यह बात किसी पर गुप्त है कि सिक्खों के काल में हमारे धार्मिक मामलों की क्या हालत थी और कैसे नमाज़ की एक बांग (अज़ान) सुनने से ही मुसलमानों के ख़ून बहाए जाते थे। किसी मुसलमान मौलवी की मजाल न थी कि एक हिन्दू को मुसलमान कर सके। अब मुहम्मद हुसैन हमें उत्तर दें कि उस समय रोम का बादशाह कहाँ था और उसने हमारे इस संकट के समय हमारी क्या सहायता की थी? फिर वह हमारा धार्मिक पेशवा और ख़ुदा का सच्चा ख़लीफ़ा क्योंकर हुआ। अन्ततः अंग्रेज़ ही थे जिन्होंने हम पर यह उपकार किया कि

पंजाब में आते ही ये सब रोकें हटा दीं। हमारी मस्जिदें आबाद हो गईं। हमारे मदरसे खुल गए और सामान्य तौर पर हमारे उपदेशक होने लगे और ग़ैर क़ौमों के हज़ारों लोग मुसलमान हुए। फिर यदि हम मुहम्मद हुसैन की तरह यह आस्था रखें कि हम केवल राजनीतिक तौर पर और बाह्य हित की दृष्टि से अर्थात् कपटाचार के तौर पर अंग्रेज़ों के आज्ञाकारी हैं अन्यथा हमारे दिल बादशाह के साथ है कि वह इस्लाम का ख़लीफ़ा और धार्मिक पेशवा है। उनके ख़लीफ़ा होने के इन्कार से तथा उसकी अवज्ञा से इन्सान काफ़िर हो जाता है। तो इस आस्था से नि:सन्देह हम अंग्रेज़ी सरकार के गुप्त बाग़ी और ख़ुदा तआला के अवज्ञाकारी ठहरेंगे। आश्चर्य है कि सरकार इन बातों की तह तक क्यों नहीं पहुंचती और ऐसे कपटाचारी पर क्यों विश्वास किया जाता है कि जो सरकार को कुछ कहता है और मुसलमानों के कानों में कुछ फूंकता है। मैं महामान्य सरकार की सेवा में सविनय निवेदन करता हूँ कि महामान्य सरकार ध्यानपूर्वक इस मनुष्य की हालतों पर दृष्टि डाले, यह कैसे कपटपूर्ण तरीक़ों पर चल रहा है और जिन विद्रोहपूर्ण विचारों में स्वयं लिप्त है वे मेरी ओर सम्बद्ध करता है।

अन्त में यह भी लिखना आवश्यक है कि इस मनुष्य ने मुझे जितनी गन्दी गालियां दीं और मुहम्मद बख़्श ज़ाफ़र ज़टली से दिलाईं तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठ गढ़ने से मेरा अपमान किया। इस बारे में मेरी फ़र्याद ख़ुदा के दरबार में है जो दिलों के विचारों को जानता है और जिसके हाथ में प्रत्येक का इन्साफ़ है। मैं ख़ुदा से यही चाहता हूँ कि जिस प्रकार का मेरा अपमान इस मनुष्य ने झूठे इल्ज़ामों से

किया, यहां तक कि महामान्य सरकार की सेवा में मुझे बाग़ी ठहराने के लिए घटना के विरुद्ध बातें वर्णन कीं, वही अपमान इस का हो। मेरा कदापि यह उद्देश्य नहीं है कि جزاء سيّئة بمثلها के तरीक़े के अतिरिक्त यह किसी और अपमान में ग्रस्त हो। अपितु मैं अत्याचार पीड़ित होने की हालत में यही चाहता हूँ कि जो कुछ मेरे लिए उसने अपमान की योजनाएं बनाईं हैं यदि मैं उन इल्ज़ामों से पवित्र हूँ तो वे अपमान उस के सामने आएं। यद्यपि मैं जानता हूँ कि यह सरकार बहुत सहनशील और यथाशक्ति दोषों को क्षमा करने वाली है। किन्तु यदि मैं मुहम्मद हुसैन के कहने के अनुसार बाग़ी हूँ या जैसा कि मैंने मालूम किया है कि स्वयं मुहम्मद हुसैन के ही बाग़ियों जैसे विचार हैं। तो सरकार का कर्तव्य है कि पूर्ण छान-बीन करके जो व्यक्ति हम दोनों में से वास्तव में अपराधी है उसे यथेष्ट दण्ड दे। ताकि देश में ऐसी बुराई फैलने न पाए। शान्ति बनाए रखने के लिए नितान्त सरल तरीक़ा यही है कि पंजाब और हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध मौलवियों से पूछा जाए कि यह व्यक्ति जो उनका सरदार और एडवोकेट कहलाता उसकी क्या आस्थाएं हैं? और क्या जो कुछ यह सरकार को अपनी आस्थाएं बताता है अपने गिरोह के मौलवियों पर भी प्रकट करता है? क्योंकि अवश्य है कि जिन मौलवियों का यह सरदार और वकील है उनकी आस्थाएं भी यही हों जो सरदार (मुखिया) की हैं।

अन्त में एक और आवश्यक बात सरकार के ध्यानार्थ यह है कि मुहम्मद हुसैन ने अपनी (पत्रिका) इशाअतुस्सुन्नः जिल्द- 18, नं.- 3 पृष्ठ- 95 में मेरे बार में अपने गिरोह को उकसाया है कि यह मनुष्य वाजिबुल क़त्ल (क़त्ल करने योग्य) है। तो जबकि एक क़ौम

का सरदार मेरे बारे में **वाजिबुल क़त्ल** होने का फ़त्वा★ देता है तो मुझे महामान्य सरकार के इन्साफ़ से आशा है कि ऐसे मनुष्य के बारे में जो कुछ क़ानूनी व्यवहार होना चाहिए वह अविलम्ब प्रकटन में आए ताकि उसके अनुयायी पुण्य प्राप्त करने के लिए इक़्दामे क़त्ल की योजनाएं न बनाएं। इति

लेखक -मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियानी से
27 दिसम्बर 1898 ई०

⁂ ⁂ ⁂

★ **नोट :-** मुहम्मद हुसैन ने इस क़त्ल के फ़त्वे के समय मुझ पर यह झूठा इल्ज़ाम लगाया है कि मानो मैंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का अपमान किया है इसलिए क़त्ल करने योग्य हूँ। परन्तु यह सर्वथा मुहम्मद हुसैन का बनाया हुआ झूठ है। जिस हालत में मुझे दावा है कि मैं मसीह मौऊद हूँ और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से मुझे समानता है तो प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि मैं यदि नऊज़ुबिल्लाह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बुरा कहता तो उन से अपनी समानता क्यों बताता? क्योंकि इस से तो स्वयं मेरा बुरा होना अनिवार्य आता है। इसी से